

ओमशान्ति मीडिया

ग्लोबल समाज की रचना के लिए समर्पित...

वर्ष - 27

नवम्बर - 2025

अंक - 11

माउंट आबू

Rs.-16

शान्ति, एकता और विश्वास के सूत्र से विश्वगुरु बनेगा भारत: राज्यपाल

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का शुभारम्भ राजस्थान के माननीय राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े तथा अन्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल ने कहा कि यहाँ आकर प्रसन्नता हो रही है। समाज में शान्ति, एकता और विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ भी कहते हैं। मीडिया लोकतंत्र की जड़ों को सींचकर सदा हरा रखने का कार्य करता है। भारत के लोगों के रक्त में ही लोकतंत्र है। विश्व में जब कुल 6 विश्वविद्यालय थे, उस समय हमारे पास नालंदा और तक्षशिला जैसे 2 विशाल विश्वविद्यालय थे। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि मीडिया का मतलब प्रमोशन होता है। शान्ति, हम



सबका स्वधर्म है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि मीडिया पर आज भी लोगों को भरोसा है, हमें इसे और अधिक प्रगाढ़ करना होगा। जिसे हम मीडिया और मेडिटेशन के समन्वय से प्राप्त कर पाएंगे। मध्यप्रदेश भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि पत्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के

वाहक हैं। सोशल मीडिया से आप लाउड स्पीकर, कंटेन्ट क्रियेटर और कंटेन्ट रिफॉर्म बन सकते हैं। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता

- त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन
- देलमर से 1500 से अधिक मीडियाकर्मी पहुंचे
- वन टू वन टॉक में हुई महान वर्षा
- 4 कार्यशालाओं व खुले सत्र में हुआ मंचन
- मीडिया में आध्यात्मिक पुट देने पर हुए सहमत

विश्वविद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार, ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. सरला दीदी, मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. शांतनु, डॉ. सोहिनी शास्त्री, राष्ट्रीय पदक प्राप्त ज्योतिषी एवं लाइफ कोच कोलकाता व दिल्ली से आये डॉ. अजीत पाठक, पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदि ने भी सम्बोधित किया। बता दें कि



मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी से ईश्वरीय सौगात प्राप्त करते हुए माननीय राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागड़े। साथ हैं मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग की स्थापना वर्ष 1980 में हुई थी। श्वेता सागर, आगरा ने स्वागत नृत्य एवं गायिका शारदा नाथ, रायपुर ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी जोनल कोऑर्डिनेटर, जयपुर ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। कार्यक्रम में देशभर से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो व वेब साइट से जुड़े 1500 से ज्यादा मीडियाकर्मियों ने भाग लिया।

विश्व को सुख-शान्तिमय बनाने का कार्य कर रहा संस्थान: डॉ. भागवत



नागपुर-मह। ब्रह्माकुमारीज विश्व शान्ति सरोवर के सातवें वार्षिकोत्सव पर आये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघवालाक डॉ. गोहन भागवत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज मानव मात्र के कल्याण का कार्य कर रही है, पूरे राष्ट्र के हित का कार्य कर रही है और सम्पूर्ण दुनिया को सुख-शान्तियुक्त सुंदर बनाने का कार्य कर रही है। यह एक पंथ पर तीन-तीन काज है। इस दिशा में हम भी कामकाज करने में लगे हैं। ब्रह्माकुमारीज शील और चरित्र जगाते हैं चरित्र जगाने का आधार है- देह व देह से जुड़े मन-बुद्धि के परे जाकर अपने अंतर की यात्रा करना। संघ भी कहता है कि बनना है तो अंदर से बनो। बाहर का बोलना, चलना फिरना ठीक करना है तो अंदर की प्रवृत्ति ठीक होनी चाहिए। उसके लिए गहराई में अंदर उतरकर वहाँ से हम सब ठीक करते हैं। सबका तरीका अपना अपना है लेकिन मूल में एक ही है कि- अपने अंदर को जगाओ। मैं ज्ञान देने के लिए नहीं, सीखने के भाव से माउंट आबू आऊंगा- हम आपस में परस्पर सहयोगी होकर चलें, परस्पर बाधक

न बनें। जैसे ब्रह्माकुमारीज सेवाओं के विस्तार के लिए किसी से कोई खर्चा नहीं मांगते हैं, वैसे ही संघ भी कार्य करता है। आज दुनिया को आवश्यकता है कि भारतवासी फिर से भरपूर होकर दुनिया

है कि यह बढ़ा होगा तो हमारा क्या होगा। जब हमें यह समझ में आता है कि मैं और मेरा मतलब हम और हमारा है तो सारी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। विश्व को आज सॉल्यूशन चाहिए। उन्होंने अपनी

भरपूर होने की। कई तरह की कार्यपद्धति को लेकर काम करने वाले प्रवाह आज भारत में विद्यमान हैं। उसमें एक बहुत विराट प्रयास ब्रह्माकुमारीज संस्थान का है। ब्रह्माकुमारीज में भाई-बहनों का रिश्ता है

वह महान भूमि है, जिसने दुनिया को जो विचार दिया है वह कोई और नहीं दे सकता। भारत में ही रामराज्य था और फिर से रामराज्य बनेगा। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से गहन शान्ति की अनुभूति कराई।

शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह देकर किया सम्मान

आरएसएस प्रमुख भागवत का संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ऊषा दीदी और ब्र.कु. देव, माउंट आबू ने भी स्वागत किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. रजनी ने संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी का शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। इस दौरान संस्थान मुख्यालय के पी.आर.ओ. ब्र.कु. कोमल ने संस्थान की सेवाओं की वार्षिक सेवा रिपोर्ट सेवांजलि भेंट करते हुए सामाजिक सेवाओं के बारे में अवगत कराया।



को सिखाए। उन्होंने कहा कि मैं बहुत जल्द माउंट आबू आऊंगा। मैं ज्ञान देने के लिए नहीं, ज्ञान लेने व सीखने के भाव से माउंट आबू आऊंगा। दुनिया में सारा झगड़ा 'स्व' का है- डॉ. भागवत ने कहा कि हम सभी एक परमात्मा की संतान हैं। दुनिया में सारा झगड़ा स्व का है। जब यह भावना हो जाती है कि मुझे चाहिए तो हम दूसरे के हित के बारे में नहीं सोचते हैं। दुनिया में यह डर रहता

अधूरी दृष्टि से हल निकालने का प्रयास किया लेकिन नहीं मिला, क्योंकि मिलना संभव नहीं है। भागवत बोले- राष्ट्र के नाते भारत अपने आप को जानता है - अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। क्योंकि हमें यह कनेक्शन पता है। यह भाव हमारे अंदर है लेकिन हमारी कृति से भी दिखना चाहिए। भारत पहले से भरपूर है, जरूरत है तो भारतवासियों को

तो सारी समस्याएं यहीं खत्म हो जाती हैं।

आबू रोड से प्रतिनिधिमंडल ने लिया भाग

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि आज पूरे विश्व को शान्ति, प्रेम, सद्भावना, एकता की आवश्यकता है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि भारत

ऊपर के पेज में देखें...

गोबइल उपयोग का वार्षिक पर प्रभाव और दुर्प्रभाव खंड- 11

2026 के लिए आत्म-उन्नति के पांच संकल्प खंड- 11

दिलचस्प बातें तुम सारे स्वर हो... खंड- 11

संक्रमण को सफल बनाने की विधि खंड- 11

नये साल 2026 की तैयारी और संकल्प

नया साल केवल कैलेंडर का पन्ना नहीं बदलता, बल्कि यह अपने जीवन में नया दृष्टिकोण और नयी स्थिति बनाने की प्रेरणा देता है।



राजयोगिनी द.कु. मंगेशकर

परमपिता परमात्मा चाहते हैं कि हम इस वर्ष को केवल सांसारिक उत्सव तक सीमित न रखें, बल्कि इसे आध्यात्मिक परिवर्तन और नये युग की तैयारी का वर्ष मनाएं।

आत्मिक स्मृति में जीना

सबसे पहले हमें ये संकल्प लेना है कि इस वर्ष हर परिस्थिति में आत्मिक स्मृति को नहीं भूलना है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की संतान हूँ- यही पहचान हमारे जीवन की असली ताकत है। जब हम आत्मा की स्थिति में रहते हैं तो किसी भी स्थिति का दबाव हमें विचलित नहीं करता।

बाबा से अटूट सम्बन्ध

नये साल की सबसे बड़ी तैयारी है- बाबा से अटूट और गहरा सम्बन्ध बनाना। केवल समय निकालकर योग नहीं, बल्कि हर क्षण योग का अभ्यास करना है। बाबा चाहते हैं कि बच्चे चलते-फिरते, काम करते, सम्बन्ध निभाते हुए भी 'मेरा मन बाबा में' की स्थिति बनाए रखें। ये स्थिति हमें शक्तिशाली बनाएगी।

संकल्पों की शुद्धता

नया साल अपने संकल्पों की जाँच और शुद्धि का समय है। सोचें- मेरे विचार, मेरे बोल और मेरे कर्म क्या बाबा की अपेक्षा अनुसार हैं? यदि कोई कमजोरी है तो उसे बदलने का पक्का और दृढ़ संकल्प करें। बाबा हमसे चाहते हैं कि हर संकल्प शुभ और कल्याणकारी हो, जिससे वातावरण भी शुद्ध हो।

सेवा में नवीनता

नये साल की तैयारी का अर्थ है- सेवा में नवीनता लाना। बाबा चाहते हैं कि हम हर आत्मा तक शान्ति और प्रेम का संदेश पहुंचाएं। इसके लिए हमें नये-नये माध्यम अपनाने होंगे- डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, व्यक्तिगत संपर्क और छोटे-छोटे प्रोग्राम तथा कॉन्फ्रेंसेज, डायलॉग आदि। सेवा से आत्मा संतुष्ट और तृप्त रहती है।

स्थिति की मजबूती

2026 में हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए- अपनी स्थिति को इतना मजबूत बनाएं कि कोई भी परिस्थिति हमें हिला न सके। चाहे बाहर कितनी भी अशान्ति हो, दुःख हो, भय वाला वातावरण हो लेकिन भीतर का मन हर पल शान्ति में स्थिर रहे। कैसा भी वातावरण का प्रभाव हो पर हमारे मन को विचलित न करे। यही स्थिति बाबा की सच्ची संतान की पहचान है।

प्यारे भाइयों और बहनों, नया साल अपने आप को बदलने और परमपिता शिव परमात्मा के करीब आकर उनसे अपना सम्बन्ध जोड़ने का सुनहरा अवसर है। बाबा हमसे चाहते हैं कि हम उनकी मददगार आत्माएं बनें- शान्ति के दूत और सुख के दाता। तो आइये, इस वर्ष का संकल्प लें कि- "मैं अपनी स्थिति को इतनी ऊंचा बनाऊंगा कि मेरा हर विचार, बोल व कर्म परमपिता शिव परमपिता को प्रत्यक्ष करने और उनसे सभी आत्माओं की मुराद पूरी करने वाला हो।"

हम अगर रोज अमृतवेले बाबा से मिलकर, बाबा से शक्ति लेके, बाबा से किरणें लेकर और लक्ष्य रखें कि मैं आत्मा तो हूँ लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ! विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, बाबा के दिलतख्तरशीन हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ... डायरेक्ट बाबा ने हमको अपना बनाया है, बाबा ने हमको चुना है। अगर ऐसे नये-नये स्वमान हम रोज स्मृति में रखें और सारा दिन ऐसे व्यतीत करें, तो एक तो वैराइटी हो जाएगा और दूसरा नशा चढ़ा रहेगा। निश्चय तो है पर नशा भी हो। इससे पुरुषार्थ में रमणीकता आ जाएगी और खुशी भी रहेगी। तो आत्म-अभिमान होकर रहने से मज्जा आता है। जैसे सीट पर बैठने से खुमारी होती है भले डॉक्टर है लेकिन जब डॉक्टर काम में है उस समय का नशा और जब घर पर रहता है, रिवाजी हो जाता है तो फर्क तो हो जाता है ना! तो सीट पर सेट रहो जिससे हमको आत्म-अभिमान बनकर रहना या चलना बहुत सहज हो जाता है। इससे ही जो हमारे व्यर्थ संकल्प हैं वो खत्म हो जाते हैं क्योंकि हमने मन को बिजी रख दिया। मन अगर स्वमान में बिजी रहा तो व्यर्थ संकल्प भी हमारे कट हो सकते हैं क्योंकि व्यर्थ संकल्पों की आदत है, तो जब भी हम एकान्त में बैठेंगे, योग में बैठेंगे या कुछ शुभ सोचने के लिए बैठेंगे, तो व्यर्थ संकल्प जरूर उसमें विघ्न डालेंगे। व्यर्थ संकल्पों के कारण ही हमारा समय भी व्यर्थ जाता है। अच्छा बात सुनी, बातें तो बाबा ने कहा आयेगी ही। जब हमारी स्थिति कभी-कभी ढीली हो जाती है तो व्यर्थ संकल्पों को चान्स मिल जाता है। और मैजारिटी या तो व्यर्थ संकल्पों का पेपर आता है या



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

मन अगर स्वमान में बिजी रहे तो व्यर्थ संकल्प कट हो जाते

स्वभाव-संस्कार का पेपर आता है। लेकिन अगर हमारा मन स्वमान में स्थित है तो हम दूसरों को भी उसी स्वमान में देखेंगे। यादगार में देखो यह जो माला बनाई हुई है उसमें मणके सब समान होते भी नम्बरवार हैं। कहाँ एक नम्बर, कहाँ 108 वां नम्बर कितना अन्तर होगा। तो जब हमको पता है कि नम्बरवार होने ही हैं तो संस्कार भिन्न होंगे ही। जैसे मम्मा की विशेषता थी, जब किसकी रिपोर्ट मम्मा के पास जाती थी तो मम्मा उसको बुलाती जरूर थी, मम्मा की हैण्डलिंग पॉवर ऐसी अच्छी थी, जो हमको भी सीखना चाहिए। मम्मा कहती थी देखो हरेक में कमियां तो हैं, जिसकी कमी हमको

दिखाई देती है उसकी चाल-चलन का प्रभाव पड़ता है। कमियां हैं लेकिन लास्ट बाबा का बच्चा भी बाबा को प्रिय है, क्यों उसमें विशेषता क्या है? भले धारणा नहीं है, उसमें विशेषता ये है जो बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य साधारण तन में आये हुए बाप को नहीं पहचान सके लेकिन इस बच्चे ने बाप को पहचान कर मेरा बाबा तो कहा। विशेषता हुई ना! तो मम्मा पहले उनकी विशेषता का वर्णन करती थी, बच्ची आप में यह-यह विशेषता है, तो उन विशेषताओं के आगे ये छोटी-सी बात क्या है! तुम ऐसी हो, तुम ऐसी हो, ये नशा चढ़ा देती थी। तो मम्मा के आगे जाने से कोई डरता नहीं था। जैसे बाबा

श्रेष्ठ संकल्प हों तो समय, श्वास, संकल्प तीनों सफल हों...



राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली सुनते या सुनाते हरेक को अन्दर चलता होगा कि आज मुरली से मुझे क्या मिला! बाबा कहते जैसे गऊ खाना खाती है फिर सारा दिन चबाती रहती है, तो उसका दूध बनता है। मनुष्य केवल खाते समय चबाते हैं, बाकी सारा दिन क्या करते हैं! हमें जो इतना भारी खजाना मिलता है, खाना भी मिलता है तो खजाना भी मिलता है। इस खजाने से कमाई कितनी है, खुशी कितनी है।

पढ़ाई अच्छी पढ़ने वाले का ध्यान रहता है प्रालम्ब के लिए। लौकिक दुनिया में जो पढ़ते हैं, वो समझते हैं पढ़ना ही है, नहीं तो जियेंगे कैसे! दुनिया को दिखाने के लिए पढ़ते हैं। हम भविष्य दुनिया की प्रालम्ब के लिए पढ़ते हैं। पढ़ाई ऐसी है जो इसमें पुस्तक उठाने की भी जरूरत नहीं है। मुरली एक बारी पढ़ो या 10 बारी पढ़ो, पर मनमनाभव के मंत्र को समझ लो। गीता में भी भगवान समझा-समझा के कहता है मनमनाभव। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। ज्ञान जो संगम पर मिला वो सतयुग-त्रेता में काम आता है। वहाँ कोई ज्ञान लेना-देना नहीं है, पर काम आता है। अभी भगवान के दिए हुए ज्ञान में ताकत है, न पास्ट याद आए, न प्रेजेन्ट में बिना काम वाली बात याद आए। अगर पास्ट इज पास्ट नहीं कर सकते तो याद नहीं रह सकती। पास्ट इज पास्ट करते हैं तो पास हो जाते हैं। बाबा ने कहा हियर नो इविल, भक्ति मार्ग की भी बातें नहीं सुनो। हमारी जीवन जब परिवर्तन होती है, शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण कैसे बन गए! सिर्फ बाबा को देखा, ज्ञान सुना, परिवार को देखा, बस ऐसे ब्राह्मण बन गए। किसी ने जबरदस्ती नहीं किया। ब्राह्मण जीवन में कितनी अच्छी-अच्छी बातें देख कर मोहित हुए हैं, ज्ञान तो पीछे सुना है। तो अन्दर में याद रखो कि हम ब्राह्मण बने क्यों? जीवन अच्छी है, परिवार साथी है, भगवान साथी है, यह सब देखकर ब्राह्मण बने हैं। इस परिवार की अच्छी-अच्छी बातें याद कर लो तो नष्टोमोहा बन जाएंगे।

हनुमान की लगन कैसी दिखाई हुई है, दिखाते हैं चोट लगी हनुमान को तो दर्द हुआ राम को। यह बाबा की प्रैक्टिकल हिस्ट्री है। एक बार मैं पूना में हॉस्पिटल में थी, मुझे जब भी डॉक्टर हाथ लगाता था तो बाबा को शॉक लगता था, शकल पीली होती जाती थी। किसी ने पूछा तो कहा जनक का दर्द पी रहा हूँ, मैं आराम से थी। वण्डर है इतना उसका प्यार है। जो थोड़ा भी बाबा को प्यार करते हैं बाबा उन्हें कितना प्यार करता है। उसका शुक्रिया मानो तो कितना प्यार करेगा। कितना हमको शान्ति और खुशी का जो भरके खजाना दिया है। जहाँ भी कदम है वहाँ सेवा है, मैं कभी नहीं कहेंगी हॉस्पिटल में हूँ। डॉक्टर को कभी ऐसा पेशेंट तो देखने को मिले, नर्सों को ऐसे पेशेंट तो मिलें जो कभी कम्प्लेन न करें। क्या बड़ी बात है! बाबा कहता है पुराने कपड़े को सम्भाल के रखना है। साफ भी रखना है, इतना अक्ल सिखा रहा है। अक्लमंद वो है जो नकल करना जानता है। बाबा को कॉपी करके अर्थात् उसकी नकल करके दिखाए। तभी अंगद जैसी अडोल अवस्था बनेगी।

बाबा की याद इतना मीठा बनाती है, किसकी याद में बैठे हैं? मेडिटेशन है क्या! न माला है, न मंत्र है। एक अक्ल है नकल करने का, दूसरा जो इलम पढ़ा है उसे अमल में लाना है। मेडिटेशन क्या है, अपने संकल्प को शुद्ध शान्त रखना। जो कहते हैं पुरुषार्थ के लिए टाइम नहीं है, वह अपने को ठगते हैं। पुरुषार्थ है क्या! अन्दर से मन को व्यर्थ से फ्री करना। अन्दर व्यर्थ में जो टाइम गंवा रहे हैं उसमें कितना नुकसान है, फिर कहते हैं टाइम नहीं है। व्यर्थ में टाइम नष्ट हो रहा है। श्रेष्ठ संकल्प हो तो समय, श्वास, संकल्प तीनों सफल हों। पुरुषार्थ में भविष्य अच्छा नजर आता है, पास्ट खत्म हो जाता है। शक्ति आ जाती है। पास्ट का कोई भी स्वभाव-संस्कार है तो वो शक्ति छीन लेता है। हिम्मत है तो बाबा की मदद है।

बाबा का हम बच्चों से दिल का प्रेम है, इसलिए दिल में आता बाबा की हम सर्विस करें। दिन-रात अथक होकर सेवा करते, तन-मन-धन लगाते। अन्दर से रहम आता जो राह भटक रहे हैं, उनको राह बताएं। सभी को बाबा का यह सन्देश दें कि आओ हम सब मिलकर बेटर वर्ल्ड बनाएं। तो अपनी वर्ल्ड समझकर सर्विस करते।

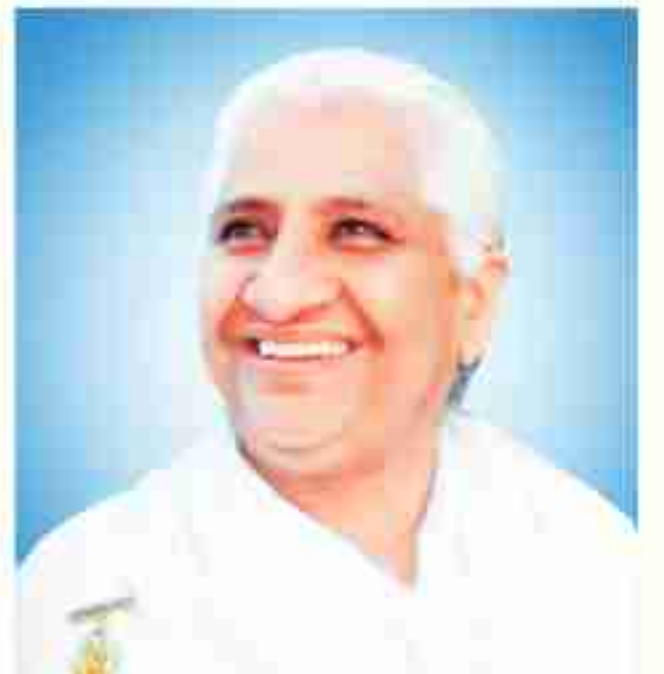
बाबा ने हम बच्चों को सर्विस का भी बहुत अच्छा खिलौना दिया है। कोई को सर्विस के बिगर चैन नहीं पड़ता। लेकिन सर्विस में कभी-कभी नाउम्मीदी भी हो जाती है। बहुत मेहनत करने पर भी रैस्पॉन्ड नहीं मिलता तो सोचते पता नहीं क्या हमारी कमी है। यह नहीं सोचते हैं कि कितना हमने बीज डाला है, वह बीज कभी जा नहीं सकता इसलिए सर्विस में कभी नाउम्मीद नहीं बनो।

समर्पित जीवन की कुछ निशानियां

1). जिसने अपनी जीवन बाबा को समर्पित कर दी उसे सूक्ष्म में भी यह संकल्प नहीं आ सकता कि पता नहीं अन्त तक चल सकूंगी या नहीं। अगर सूक्ष्म में

सफेद कपड़ा, जेब खाली... वह है विश्व के मालिक।

4). समर्पित माना हर संकल्प श्रेष्ठ, शुद्ध पावन हो तब हमारी भावनाओं का असर दूसरों पर पड़ेगा। हम एक-एक ऊंचा बनें तो किला मजबूत होगा। पवित्र संस्कार रखने से वायब्रेशन फैलते हैं। अगर एक को भी तूफान आता है तो वह सोचे कि हमारे वायब्रेशन सारे किले में फैल रहे हैं। अगर इतनी जवाबदारी समझें तो तूफान खत्म हो जाएगा। हमारा एक पाँवरफुल शुद्ध संकल्प पूरे किले को मजबूत बनाएगा।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती उतना मेरे से सब सीखते

भी यह संकल्प आता तो यह बड़ी माया है। संकल्पों में दृढ़ता है तो कमजोर संकल्प उठ नहीं सकते।

2). समर्पित आत्मा के लिए बुरा बोलना, बुरा देखना तो दूर रहा लेकिन बुरा सोचने को संकल्प भी नहीं आ सकता। उन्हें तो बस एक ही लगन है कि हमें अपनी बैग बैगेज कम्पलीट हिसाब-किताब चुकतु करके बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

3). हमारा एक-एक कदम सारे विश्व से सम्बन्धित है। हम यज्ञ के किले की एक-एक ईंट हैं। अगर एक ईंट भी गिरी तो सारी दीवाल हिला देगी। साधनों में वृत्ति गई तो साधना टूट जाएगी। जो बाबा को समर्पित हो गए, उनका जवाबदार बाबा है। वह कभी पैसे के पीछे नहीं भागते, कोई भी प्रकार का बिजनेस आदि भी नहीं कर सकते। उन्हें खिलाने वाला, पहनाने वाला, सुलाने वाला बाबा है, इसलिए वे सब प्रकार के चिंतन और चिंताओं से मुक्त रहते हैं। उनके लिए तो कहा जाता-

5). मेरे ऊपर अगर कोई विशेष खर्चा हो तो यह भी मेरे खाते में जमा होता है। मेरे ऊपर इतना ही खर्च होना चाहिए जितना अनुकूल है। अगर किसी भी आदत के कारण कोई विशेष खर्च होता तो यह भी बोझ बढ़ता। जिसने पाई-पाई जमा करके दान दिया उसका जमा हो गया और मैंने अपने प्रति यूज किया तो मेरे खाते से ना अर्थात् घाटा हो गया।

6). हमें अपने संकल्प उतने ही खर्च करने हैं जिससे सारे वायुमण्डल में साइलेन्स का प्रभाव रहे। ऐसा न हो मेरे संकल्प साइलेन्स के वायब्रेशन को डिस्टर्ब करें, इसका भी कई गुणा हिसाब बनता है। मेरी एक की स्थिति खराब हुई तो उसका असर बहुतों पर पड़ता है। मेरे को देख दूसरे भी सीखते तो उसका वायुमण्डल जो बनता उसके निमित्त भी मैं बनी। जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती उतना मेरे को देख सब सीखते हैं तो मेरा उसमें जमा हो जाता। मेरे त्याग ने दूसरों में त्याग पैदा किया तो मेरा संग तारने वाला बना।

सर्वशक्तिवान परमात्मा से अपने में शक्तियां भरने का तरीका

मनुष्य जीवन केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक ही सीमित नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य आत्मा को जाग्रत कर, सर्वशक्तिवान परमात्मा से सीधा संबंध जोड़ना है। जब हम परमात्मा से जुड़ते हैं तभी हमारे भीतर दिव्य शक्तियों का प्रवाह होता है। यह शक्तियां न केवल जीवन की कठिनाइयों से उबरने में मदद करती हैं, बल्कि हमें पवित्र, संतुलित और स्थिर भी बनाती हैं।

आत्म-चेतना की पहचान

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि मैं केवल शरीर नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली आत्मा हूँ। आत्मा ही सच्चा 'मैं' है और यह परमात्मा की संतान है। जब हम वास्तविक स्वरूप को पहचान लेते हैं तो हमारे भीतर एक नई ऊर्जा जाग्रत होती है। यह आत्म-चेतना परमात्मा की ओर ले जाती है।

परमात्मा से संबंध(योग)

योग- आसन, प्राणायाम नहीं है बल्कि आत्मा और परमात्मा का मिलन है। मौन- मन से परमात्मा को स्मरण करना, उन्हें सबसे प्यारे पिता, शिक्षक और साथी मानकर उनके साथ हृदय का संबंध जोड़ना ही सच्चा राजयोग है। जब आत्मा, परमात्मा की स्मृति में रहती है तो वह उनसे शक्तियां खींचती है।

पवित्रता और संयम

परमात्मा पूर्ण रूप से पवित्र है यदि हमें उनसे

शक्तियां लेनी हैं तो हमें अपने जीवन में पवित्रता और संयम को अपनाना आवश्यक है। अशुद्ध विचार और विकार आत्मा की शक्ति को क्षीण



कर देते हैं इसीलिए मन, वचन और कर्म में पवित्रता ही परमात्मा से जुड़ने का सच्चा आधार है।

सेवा और शुभकामना

जब हम निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा

करते हैं, शुभकामनाएं और शुभभावनाएं फैलाते हैं, तब आत्मा हल्की और शक्तिशाली बनती है। परमात्मा भी उन्हीं आत्माओं को अधिक शक्तियां प्रदान करते हैं जो उनके दिव्य गुणों को संसार में बांटते हैं।

ध्यान और मन की एकाग्रता

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में मन अत्यधिक भटकता है। ध्यान व अटेन्शन द्वारा हम मन को स्थिर कर परमात्मा की स्मृति में लगा सकते हैं। नियमित अभ्यास से आत्मा की बैटरी चार्ज होती है और हम निरन्तर शक्ति का अनुभव करते हैं।

विश्वास और समर्पण

परमात्मा पर अटूट विश्वास और आत्मा का पूर्ण समर्पण शक्ति प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन है। जब हम यह मान लेते हैं कि सच्चा कर्ता-धर्ता वही है और हम केवल उनके निमित्त मात्र हैं, तब हमारे भीतर चिन्ता और भय समाप्त हो जाते हैं। यही स्थिति निर्भय और शक्तिशाली बनाती है। सर्वशक्तिवान परमात्मा से शक्तियां प्राप्त करना किसी जादू या चमत्कार से संभव नहीं है, बल्कि यह एक आन्तरिक साधना है। आत्म-चेतना, पवित्रता, योग, सेवा, ध्यान और समर्पण- इन साधनों से आत्मा, परमात्मा से जुड़कर अपार शक्तियां ग्रहण करती है। जब आत्मा, परमात्मा से शक्ति पाती है, तब जीवन सहज, संतुलित और सुखमय हो जाता है। यही मानव जीवन का सच्चा लक्ष्य है।



नई दिल्ली। भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को भगवान जगन्नाथ का दिव्य स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्रह्माकुमारीज के परिवहन एवं यात्रा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी।



लखनऊ-जानकीपुरम(उ.प्र.)। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से स्नेह मूलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राधा एवं ब्र.कु. सुमन।



नई दिल्ली-हरि नगर। दिल्ली के साउथ ब्लॉक स्थित थल सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी के कार्यालय में उनसे स्नेह मूलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए मुख्या प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सारिका, ब्र.कु. विनीता, सेवानिवृत्त वाइस एडमिरल सतीश कुमार नामदेव घोरमडे तथा अन्य ब्रह्माकुमारी भाई।



रूस-मॉस्को। भारतीय दूतावास, रूसी संघ और रूस के प्रिमेस्को क्षेत्र के संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में व्यादिवोस्तोक स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास में आयोजित रूसी बाल कला प्रतियोगिता-रामायण महाकाव्य से प्राचीन भारत की किंवदंतियां और मिथक व 'समय और देशों को जोड़ना' कार्यक्रम आयोजित किए गए। तत्पश्चात् समूह चित्र में रूस के पूर्वी क्षेत्र में भारत के महावाणिज्यदूत मिहिराथ गौरव, लेखिका ब्र.कु. ओल्गा श्मिरनोवा, ब्र.कु. अल्लु सदेवनिका, व्यादिवोस्तोक केन्द्र समन्वयक तथा अन्य।



नैनीताल-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज के सिक्वोरिटी सर्विसेज विंग(एस.एस. डब्ल्यू) के सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन के अंतर्गत उत्तराखंड के हल्द्वानी क्षेत्र में आई.टी.बी.पी. की 34वीं बटालियन के सुखा बलों के लिए 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए सेवानिवृत्त कर्नल ब्र.कु. बीसी सती व ब्र.कु. नीलमा। कार्यक्रम में ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. ईश्वर, कॉमोडोर ब्र.कु. धोषल, धोड़खाल, 21सी हेमंत कुमार तथा अन्य अधिकारियों के साथ-साथ सैनिकों की भी उपस्थिति रही।



दिल्ली-छत्तरपुर। माँ कात्यायनी मंदिर के मार्कंडे हॉल में साउथ दिल्ली के सभी ब्रह्माकुमारीज सेंटर के तत्वावधान में आयोजित संगठित योग भट्टी कार्यक्रम में ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. लक्ष्मी, छत्तरपुर, ब्र.कु. सुमित्रा, राजपुर खुर्द, ब्र.कु. आशा, खानपुर, ब्र.कु. अनोता, महारौली, ब्र.कु. गीता, श्री फोर्ट, ब्र.कु. सुंदरी, मालवीय नगर, ब्र.कु. सपना, लाजपत नगर, ब्र.कु. गिरिजा, लोधी रोड तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों की उपस्थिति रही।



दक्षिण अफ्रीका-लागोस। सेलबोन गोल्फ एस्टेट में ब्रह्माकुमारीज संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी के साथ तीन दिवसीय राष्ट्रीय एकांतवास आध्यात्मिक समागम 'अपनी पूर्ण और परिपूर्ण अवस्था को स्वीकार करना: निराकार, अहंकारहीन और निर्विकार बनना' कार्यक्रम में उपस्थित भाई-बहनें।



मॉस्को-रशिया। मॉस्को के क्रेमलिन स्थित मानेज स्क्वायर में भारत और रूस के बीच सम्बन्धों को और मजबूत करने के लिए आयोजित नौ दिवसीय 'भारत उत्सव 2025' में सरल राजयोग ध्यान के सिद्धान्त और अभ्यास पर सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी। कार्यक्रम में उपस्थित रहे मॉस्को सरकार और दिल्ली के मुख्य सचिव धर्मेन्द्र, नागार्लैंड के माननीय मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो, रूसी संघ में भारत के राजदूत महामहिम विनय कुमार।



मिलपितास-सिलिकॉन वैली(यूएसए)। भारतीय महावाणिज्य दूतावास, सैन फ्रांसिस्को कार्यालय(सीजीआई), इंडिया कम्प्यूटि सेंटर(आईसीसी) और खाड़ी क्षेत्र के विभिन्न गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।



देहरादून-विकासनगर(उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर 'सर्व समस्याओं का समाधान- राजयोग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् पूर्व कैबिनेट मंत्री नवप्रभात शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सबजों प्रमुख महादेव नगर, गुजरात सेवाकेन्द्र संचालिका, कला एवं संस्कृति प्रभाग और युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी। साथ हैं ब्र.कु. तारा।



पलवल-रसूलपुर रोड(हरियाणा)। हरियाणा सरकार खेल मंत्री, पलवल डिस्ट्रिक्ट विधायक गौरव गौतम से मुलाकात करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. पिस्ता बहन, ब्र.कु. राजेन्द्र तथा अन्य।



जयपुर-सोडाला(राज.)। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. स्नेह दीदी, ब्र.कु. राखी, विधायक गोपाल शर्मा, फिल्म अभिनेत्री शशि वर्मा, अनुकंपा चैवरमैन गोपाल प्रसाद गुप्ता, मॉडल एवं एंकर वर्षा मित्तल, डिप्टी कमिश्नर चारु शर्मा, डिप्टी कमिश्नर रितु मीणा, लड्डू स्टाल कोच एवं सीनियर नेचुरोपैथी डॉ. भुवनेश माथुरिया तथा अन्य।



भुवनेश्वर-ओडिशा। 'समाज सेवा में नए आयाम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. ओंकार, माउंट आबू, कैलाश कानूनगो, रोटी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटीरियन यज्ञसिन्हा महापात्रा तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।



नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज के परिवहन एवं यात्रा प्रभाग (टोटोडब्ल्यू) के रजत जयंती समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ हुई आध्यात्मिक बैठक में उपस्थित रहे परिवहन एवं यात्रा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी, परिवहन एवं यात्रा प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सुरेश, परिवहन एवं यात्रा प्रभाग के मुख्यालय कॉऑर्डिनेटर, मार्गेंट आबू, सोमेश्वर, मार्गेंट आबू, प्रो. ईवी गिरिश तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



चंडीगढ़। हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री नाथ सिंह सैनी को अक्टूबर 2025 में होने वाले ग्लोबल समिट के लिए निर्माण देते हुए राजयोगी ब्र.कु. मेहरचंद, सीनियर नेशनल कॉऑर्डिनेटर स्पोर्ट्स विंग एवं निदेशक करनाल एवं गढ़वाल स्कूल उत्तराखंड। साथ है ब्र.कु. नीलम, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड, ब्र.कु. सरिता, असंध, करनाल तथा अन्य।



जयपुर-राजापार्क (राज.)। राजस्थान के माननीय उपमुख्यमंत्री प्रेम चंद बैरवा से मुलाकात करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. पूजा एवं ब्र.कु. रोहित।



चुनार-उ.प्र.। सीखड़ गांव में नव चेतना एग्रीकल्चर कम्पनी लिमिटेड के तहत अमृतदाय डेयरी फार्म के उद्घाटन कार्यक्रम पश्चात् श्रीमती प्रतिभा शर्मा, राज्यमंत्री- महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार, उत्तरप्रदेश सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बीनू, ब्र.कु. तारा एवं ब्र.कु. सुनीता।



भरतपुर-कृष्णा नगर (राज.)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दावी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. प्रवीणा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. नुगलकिशोर, विधायक डॉ. सुभाष गर्ग, अतिरिक्त जिला कलेक्टर घनश्याम शर्मा, विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष विष्णु सैनी, रिटायर्ड कर्नल तेजशम तथा अन्य।



गुमला-झारखंड। सेवाकेन्द्र पर आयोजित सामूहिक योग भट्टी कार्यक्रम के समापन अवसर पर समूह चित्र में ब्र.कु. शान्ति, ब्र.कु. डॉ. राजेश, ब्र.कु. शिव, वरिष्ठ चाटर्ड अकाउंटेंट विनोद बंका एवं उनकी धर्मपत्नी सुनीता बंका, जिला उपभोक्ता फोरम न्यायाधीश ओम प्रकाश पांडे, फाइनेंस एडवाइजर, अशोक साहेवाल, व्यवसायी संजय अग्रवाल एवं उनकी धर्मपत्नी बबिता अग्रवाल, सौरव अग्रवाल तथा अन्य।

आने वाला वर्ष 2026 हरेक आत्मा के लिए गहन आध्यात्मिक उन्नति का अवसर लेकर आयेगा। यह समय केवल तिथियों का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह आत्मा के नवजागरण और परमात्मा से सच्चे संबंध को और प्रगाढ़ बनाने का स्वर्णिम अवसर है।

द्वारा उनके साथ गहन आत्मिक कनेक्शन विकसित करना ही वास्तविक शक्ति का स्रोत है। परमात्मा हमारा परमपिता है हम उनके बच्चे हैं ये संबंध से ही शक्ति प्राप्त होगी। जो आने वाले समय की चुनौतियों को पार करने के लिए हमें इसी शक्ति की आवश्यकता हर कदम पर होगी।

संकल्पित लक्ष्य-

2026 का संकल्प यही है कि हर आत्मा पवित्रता, शान्ति और प्रेम को जीवन का आधार बनाए। पुरानी कमजोरियों और संस्कारों को त्यागकर नये दिव्य संस्कारों को धारण करना ही वास्तविक नया साल मनाना है। यह केवल त्योहारों की खुशी नहीं, बल्कि आत्मा की उड़ान का उत्सव है।



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

2026 साल सिर्फ खुशी का नहीं, बल्कि आत्मा की उड़ान का उत्सव

संकल्प-शक्ति का प्रयोग

2026 हमें याद दिलाता है कि संकल्प ही हमारी वास्तविक सृजनशक्ति है। सकारात्मक और शुद्ध संकल्प से न केवल हमारा जीवन बदल सकता है बल्कि वातावरण भी रूपांतरित हो सकता है। नये वर्ष में हम ईश्वरीय संतान को, नकारात्मक विचारों को समाप्त कर केवल सार्विक और कल्याणकारी संकल्पों को धारण करने का अभ्यास करना है।

सेवा व आत्म-उन्नति के लिए

सेवा का आया नया वर्ष केवल आत्म-उन्नति के लिए नहीं, बल्कि विश्व सेवा के लिए भी विशेष है। हमें अपने जीवन को ऐसा बनाना है कि हमारे हर विचार, हर बोल और हर कर्म से दूसरों को प्रेरणा और शान्ति का संदेश मिले। डिजिटल युग में माध्यमों के द्वारा आध्यात्मिकता का प्रसार करना समय की मांग है। परंतु ध्यान भी रखना है कि इस साधन का उपयोग सेवार्थ ही करें, परमात्मा की स्मृति भी उसमें समाई हुई हो।

2026 का नया साल आत्मों के लिए स्वर्णिम अवसर है। यदि हम आत्म-

नया

वर्ष हमारे लिए तो

खुशियां लायेगा ही किन्तु

हमें दूसरों के जीवन में भी खुशियां

भर उन्हें परमात्मा का संदेश देकर

उनके जीवन में भी रेशनी लाएं, उनका

जीवन सहज और सुगम बने, उनके चेहरे

पर भी खुशियों की झलक दिखाई दे।

आत्मिक भाव का तीव्र अभ्यास कर

अपनत्व सा दूसरों के साथ

व्यवहार करें।

जागरूकता, परमात्म संबंध और शुद्ध संकल्पों के मार्ग पर चलते हैं, तो न केवल अपनी उन्नति करेंगे बल्कि संसार को भी शान्ति और सुख का संदेश देंगे। यही सच्चा आध्यात्मिक नव वर्ष होगा।



कोटा-कुन्हाडी (राज.)। हरित भरत एक्सपोजे में बिजनेस एंड इंडस्ट्रीज विंग के तहत लगाई एग्जीबिशन का उद्घाटन करने के पश्चात् राजेश कृष्ण विरला, प्रदेश अध्यक्ष इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी राजस्थान, चेयरमैन कोटा नागरिक सहकारी बैंक लिमिटेड को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी। साथ है कोटा व्यापार संघ के महासचिव अशोक महेश्वरी।



दिल्ली-अली विहार। एनॉन ग्लोबल फाउंडेशन एंड आर्क फाउंडेशन द्वारा ग्रामीण शिक्षिकाओं व बच्चों को अधिक रचनात्मक, प्रभावशाली और आत्मनिर्भर तरीके से पढ़ाने के उद्देश्य से 'पहचानो अपनी शक्ति' विषय पर आयोजित कार्यशाला के पश्चात् एनॉन ग्लोबल फाउंडेशन की संस्थापक और अध्यक्ष डॉ. आरती गिरधर को मोमेंटो व सर्टिफिकेट भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।



पटना-शेखपुरा (बिहार)। फुटबल डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट बिहार, पटना में गोडेशन कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. उर्मिला को मोमेंटो भेंट करते हुए एच.आर. राजीव जी।



सादलपुर-राज.। मोहता शैक्षणिक संस्थान के स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् उप प्राचार्य इंद्र सिंह राठौड़ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा। साथ है ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. अनिल, कथा वाचक उपेन्द्र पांडेया, जे.पी. मारवाल, मनोष शर्मा एवं भजन गायिका मीरा प्रजापत तथा अन्य।



मॉस्को-रूस। रक्षाबंधन पर्व पर 'आध्यात्मिक शक्तियाँ ईश्वर की विरासत हैं' विषय पर आयोजित क्षेत्रीय शिक्षक रिट्रीट पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रवर्ती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी, ब्र.कु. इन्ना किम, ब्र.कु. इरीना इलिना तथा अन्य बेलारूस, लातविया, एस्टोनिया, कजाकिस्तान, मंगोलिया की ब्रह्माकुमारी बहनें।



चाइना-गुआंगजो। रक्षाबंधन पर्व के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज द्वारा कोंगुआ पर्वत के रिसॉर्ट में आयोजित रिट्रीट 'क्राफ्टिंग योर लाइफ्स मिशन' के पश्चात् समूह चित्र में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, मार्गेंट आबू, चाइना ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका ब्र.कु. सपना दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें।



2026 के लिए आत्म-उन्नति के पांच संकल्प

डॉ. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

समय बहुत मूल्यवान और परिवर्तनशील है। आज हम सब जानते हैं कि यह संगमयुग का अंतिम समय है और हमें सतयुग की ओर जाना है। इस समय हर आत्मा को अपनी चाल-चलन, विचार और व्यवहार को ऐसा बनाना है कि हर कोई हमें देखकर परमात्मा का स्मरण करे। इस नये साल के आरंभ के पूर्व आत्म-स्वरूप में स्थित होकर ये दिव्य संकल्प लें।

1. आत्म-स्मृति व परमात्मा से अटूट संबंध

'सबसे पहले आत्मा को अपनी पहचान दें।' नया साल 2026 हमें यह स्मरण कराता है कि मैं आत्मा हूँ, शुद्ध, शान्त और शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ। इस आत्म-स्वरूप में स्थित रहकर हमें हर क्षण शिवबाबा से योग जोड़ना है। यही योग आत्मा को शक्ति देगा और चेहरे पर दिव्यता लायेगा।

2. पवित्रता और शुद्ध संकल्प

सतयुग की तैयारी के लिए पवित्रता हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। इसलिए विचारों से लेकर व्यवहार तक शुद्धता को अपनाना है। जब संकल्प पवित्र होंगे, तभी संबंधों में सच्चा आदर और सम्मान बनेगा। नया साल हमें यही शिक्षा देता है कि अपनी दिनचर्या को स्वच्छ और सात्विक बनाएं।

3. संबंधों में आदर और करुणा

आत्म-उन्नति केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारे संबंधों से भी प्रकट होती है। हर आत्मा, परमात्मा की संतान है, इसलिए हमें सबके प्रति आदर, करुणा और सम्मान की दृष्टि रखनी है। नए साल में यह संकल्प लें कि किसी की आलोचना नहीं करेंगे, बल्कि हर आत्मा में श्रेष्ठता को देखेंगे।

4. राजयोग को जीवनशैली बनाना

राजयोग केवल ध्यान का अभ्यास नहीं है बल्कि जीवन जीने की कला है। राजयोग को केवल मुरली सुनने तक न रखें, बल्कि उसे व्यवहार में उतारें। हर परिस्थिति में शांत रहना, हर स्थिति को अवसर बनाना, यही राजयोग की पहचान है। नए साल में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि राजयोग हमारे हर क्षण की जीवनशैली बन जाए।

5. सेवा और परमात्म संदेश

समय बहुत कम है और दुनिया परिवर्तन के द्वार पर खड़ी है। इसलिए नए साल 2026 में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि अपने विचारों, वाणी और कर्म से अधिक से अधिक आत्माओं तक परमात्मा का संदेश पहुँचाएँ। यह सेवा ही सच्ची खुशी का आधार है और यही हमें सतयुग की ओर ले जाएगी।

यदि हम इन पाँच संकल्पों को अपने जीवन का हिस्सा बना लें-

1. आत्म-स्मृति और परमात्मा से योग
2. पवित्रता और शुद्ध संकल्प
3. संबंधों में आदर और करुणा
4. राजयोग को जीवनशैली बनाना
5. सेवा और परमात्म संदेश



दिल्ली-सिविल लाइंस। दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से स्नेह मिलन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, माउंट आबू। साथ है स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीरा दीदी एवं ब्रह्माकुमारीज एजुकेशन प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. शिविका, माउंट आबू।



दिल्ली-पीतमपुरा। रक्षाबंधन पर्व पर भारत के माननीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को रक्षामूर्त बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा। साथ है ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. ललिता तथा अन्य।



शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी जो से मुलाकात करते हुए समूह चित्र में उत्तरप्रदेश के वन, पर्यावरण, जंतु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री कृष्णपाल मलिक, ब्र.कु. रामसुख मिश्रा, अनाज विभाग, शान्तिवन तथा अन्य।



वाराणसी-सरनाथ(उ.प्र.)। प्रधान आयुक्त हरिगोविंद सिंह के आमंत्रण पर वाराणसी के आयुक्त कार्यालय में आयोजित एक दिवसीय 'तनाव प्रबंधन एवं मेडिटेशन' कार्यशाला में आयुक्त विभाग के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए मोटिवेशनल एवं राजयोगी ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी। कार्यक्रम में ब्र.कु. विपिन, एडिशनल कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स ऑफिस गिरिन्द्र प्रताप सिंह, इनकम टैक्स ऑफिसर राकेश श्रीवास्तव, एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर मनोज शर्मा, इनकम टैक्स ऑफिस के सौनियर ऑडिटर ब्र.कु. वेद प्रकाश, ब्र.कु. संदीप, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. अनीता पटेल तथा अन्य अधिकारीगण आदि की उपस्थिति रही।



पणजी-गोवा। बैंक ऑफ इंडिया स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, पणजी में 'खुशी का विज्ञान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कौस्तुभ, ब्र.कु. शोभा, सिंधुदुर्ग, प्रधानाचार्य संजय बुरबुरे, उप प्रधानाचार्य बृजेश श्रीवास्तव तथा अन्य स्टाफगण।



वाराणसी-उ.प्र.। जे.सी.आई. शाहगंज सिटी के द्वारा आयोजित एक दिवसीय खुशनुमा जिंदगी और हार्मनी इन रिलेशनशिप विषय पर आयोजित सेमिनार के पश्चात् दीपा सेट, प्रेजिडेंट जे.सी.आई. शाहगंज सिटी द्वारा मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन, सारनाथ को मोमेंटो एवं सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। साथ है ब्र.कु. उषा, स्थानीय शाखा प्रभारी ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. अनीता, सारनाथ तथा अन्य।



शिमला-पंथाघाटी(हि.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के सद्भावना भवन सेवाकेन्द्र की रजत जयंती व स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी के स्वर्ण जयंती समारोह में स्वामी ओंकारेश्वर सरस्वती स्वामी दयानंद, आश्रम अधीक्षक, ब्र.कु. भानु प्रकाश, माउंट आबू, सेक्रेटरी टेक्निकल एजुकेशन संदीप कदम तथा अन्य की उपस्थिति रही।



फर्रुखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। कुलाधिपति मेजर एसडी सिंह यूनिवर्सिटी, फर्रुखाबाद के डॉ. अनार सिंह यादव व चेयरमैन, मेजर एसडी सिंह मेडिकल कॉलेज, श्रीमती डॉ. अनीता यादव को ग्लोबल समिट कार्यक्रम का निमन्त्रण देते हुए ब्र.कु. मंजू। साथ है ब्र.कु. सृष्टि, ब्र.कु. त्रिलोकी एवं ब्र.कु. शिवराम।



पटना सिटी-मंगल तालाब(बिहार)। अनिकेत सेवा, सवेरा नशा मुक्ति केंद्र एवं ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वावधान में नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध व्यापार के विरुद्ध आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. रानी बहन, श्रीमती सीता साहू, महापौर, श्रीमती किरण घई, भूतपूर्व सदस्य बिहार विधानसभा परिषद एवं भूतपूर्व प्राध्यापिका वुमेन्स कॉलेज, चंद्रशेखर प्रसाद रजक, उप महाप्रबंधक बिहार मेडिकल सर्विस एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, सरदार त्रिलोक सिंह, मुख्य संरक्षक, सेवादार समाज कल्याण समिति तख्त श्री हरमंदिर पटना साहिब।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk



BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - ₹-200, तीन वर्ष - ₹- 600, अजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

स्वास्थ्य

अनार खाने के फायदे बेहतरीन

त्वचा रोग में अनार से फायदा

त्वचा रोग में भी अनार का प्रयोग बहुत फायदा पहुंचाता है। त्वचा संबंधित बीमारी में 250ग्राम अनार के ताजे पत्तों को 5लीटर पानी में उबाल कर काढ़ा बना लें। इस काढ़ा से नहाने से पित्ती संबंधित त्वचा की बीमारी ठीक होती है।

अनार का इस्तेमाल त्वचा में निखार लाने के लिए भी किया जाता है। 1किग्रा अनार के फल के छिलके को 4 लीटर पानी में डालकर उबाल लें। जब पानी 1लीटर रह जाए, तो उसमें 250मिली सरसों का तेल डालकर पका लें। इस तेल

पीड़ित हैं, वे 20ग्राम अनार के ताजे पत्ते लेकर, 400मिली पानी में उबालें। जब पानी 100 मिली शेष रह जाए, तो इसमें गर्म दूध मिलाकर पिएं। इससे नींद ना आने की परेशानी खत्म होती है।

भूख बढ़ाने में फायदेमंद

भूख ना लगने की परेशानी के लिए अनार के पत्तों को छाया में सूखा लें। इसमें सेंधा नमक मिलाकर महीन चूर्ण बना लें। इसे 4-4ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम खाने से पहले लें। इसे पानी के साथ सेवन करें। इससे भूख बढ़ती है और खाना ठीक से

टाइफाइड में फायदेमंद

टाइफाइड एक खतरनाक बीमारी है। इसे मियादी बुखार भी कहते हैं। टाइफाइड बैक्टीरिया के इंफेक्शन के कारण होता है। टाइफाइड के उपचार के लिए 10-15अनार के पत्ते के काढ़े में थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करें। इससे टाइफाइड में लाभ होता है।

मूत्र संबंधित रोगों में फायदेमंद

मूत्र रोग(पेशाब संबंधित बीमारी) में लाभ पाने के लिए 10ग्राम अनार के पत्ते और 10ग्राम हरा गोखरू को 150मिली पानी में पीस लें और इसे छानकर पीने से पेशाब संबंधी बीमारी में लाभ होता है।

यादश्त में सुधार

चार सप्ताह तक अनार के जूस का नियमित सेवन करने से यादश्त में सुधार होता है। यह पोस्ट हार्ट सर्जरी और अल्जाइमर रोग जैसे यादश्त संबंधी विकार के उपचार में भी मददगार साबित होता है।

अनार का सेवन इतनी मात्रा में किया जा सकता है:-

चूर्ण - 2-4ग्राम
रस - 20-40मिली
बीमारियों में अनार का पूरा लाभ लेने के लिए चिकित्सक से परामर्श जरूर लें।

अनार के सेवन से नुकसान

जिन लोगों का शरीर शीत प्रकृति वाला(ठंडा रहता हो) हो, उन्हें अनार का सेवन नहीं करना चाहिए।

अनार किसे पसंद नहीं है। अनार का छिलका जितना कठोर होता है, अंदर उतना ही स्वादिष्ट और मीठा फल होता है। किसी भी व्यक्ति को, कोई भी रोग हो जाए, लोग उन्हें सबसे पहले अनार के सेवन की सलाह ही देते हैं। डॉक्टर भी कमजोरी दूर करने के लिए या इलाज के बाद स्वास्थ्य लाभ पाने के दौरान, रोगी को अनार खाने के लिए बोलते हैं। आपको भी यही पता होगा कि अनार के सेवन से आपकी सेहत को बहुत फायदे मिलते हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि अनार के वे फायदे कौन-कौन से हैं? नहीं ना! आप यह नहीं जानते होंगे कि अनार का प्रयोग कर रोगों की रोकथाम भी की जा सकती है।

आयुर्वेद में अनार को बहुत ही चमत्कारिक फल बताया गया है, और यह भी बताया गया है कि इसके इस्तेमाल से कई सारी बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। केवल अनार फल ही नहीं, बल्कि पूरा वृक्ष ही औषधीय गुणों से भरपूर होता है। जब अनार में इतनी खूबियां हैं तो आप अनार के फायदे के बारे में जरूर जानना चाहेंगे। यहाँ अनार के फायदे, उपयोग की विधियां, मात्राएं आदि सभी जानकारी दी गई हैं :-

अनार के सेवन से शारीरिक और

कमजोरी ठीक होती है।

मानसिक कमजोरी में फायदा

अनेक लोगों को थकान और कमजोरी की शिकायत रहती है। ऐसे लोग 20 ग्राम अनार के ताजे पत्ते लेकर, 400 मिली पानी में उबाल लें। जब पानी 100 मिली शेष रह जाए, तो इसमें गर्म दूध मिलाकर पिएं। इससे शारीरिक और मानसिक

मुंह के छाले की समस्या में उपयोग

मुंह के छाले की परेशानी में अनार का प्रयोग फायदेमंद होता है। अनार के 25ग्राम पत्तों को 400मिली पानी में उबालें। जब पानी एक चौथाई बच जाए, तो उससे कुल्ला करें। इससे मुंह के छाले, और अन्य बीमारी भी ठीक हो जाती हैं।

की मालिश करें। कुछ ही दिनों में मांस का ढीलापन दूर हो जाता है। चेहरे की झुर्रियां मिटती हैं तथा त्वचा में निखार आता है। आप सरसों के तेल की जगह बादाम रोगन का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

नींद ना आने की परेशानी में लाभ

जो व्यक्ति नींद ना आने की परेशानी से

पचता है।

हेजा में अनार से लाभ

हेजा के उपचार के लिए 6ग्राम अनार के हरे पत्तों को, 20मिली पानी के साथ पीस लें। इसे छान लें। इसमें 20मिली चीनी का शरबत मिलाकर, 1-1घंटे बाद पिलाएं। इसे तब तक पिलाना है, जब तक बीमारी ठीक ना हो जाए।



रांची-झारखंड। शिक्षक दिवस पर 'नव निर्माण में शिक्षकों का योगदान' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, राजकीय उच्च विद्यालय की प्राचार्या कल्याणी कुमारी, बाजरा, संत कोलंबस स्कूल की उप प्राचार्या अमृता पांडेय, रांची विश्वविद्यालय के राजनिक शास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष व सेंट्रल अकादमी की प्राचार्या स्नेहा रॉय, लाला लाजपत राय पब्लिक स्कूल के उप प्राचार्य प्रफुल्ल कुमार व प्राचार्य शैलेन्द्र कुमार, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय के सह प्राध्यापक डॉ. समीर चटर्जी व डॉ. मेनक बनर्जी, जी एंड एच स्कूल के प्राचार्य दिलीप झा, झारखंड मुक्त विश्वविद्यालय के उप कुलपति त्रिवेणी नाथ साहू, राजकीय उच्च विद्यालय के प्राचार्य आनंद कुमार मिश्र, बोड्डेया एवं संत मिचैलस स्कूल के शिक्षक संजय वेदी।



नरवाना-प्रेम नगर(हरियाणा)। शिक्षक दिवस के अवसर पर शिव शिशु हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. संजीव, प्रिंसिपल अशोक शर्मा और किरण शर्मा एवं स्कूल स्टाफ।



बड़कोट-उत्तरकाशी(उत्तराखंड)। नशा मुक्त भारत अभियान के एलईडी प्रचार वाहन को हरी झण्डी दिखाकर स्वागत करते हुए उपजिला अधिकारी वृजेश तिवारी। साथ ही थाना अध्यक्ष दीपक कटैत, व्यापार सभा अध्यक्ष धनवीर खन्त, ब्र.कु. बहने तथा अन्य।



टोंक-राज. ब्रह्माकुमारीज के राजयोग भवन में शिक्षाविदों के सम्मान समारोह के अंतर्गत 'शिक्षक-ज्ञान, संस्कार एवं प्रेरणा के स्रोत' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्पणा, ब्र.कु. रश्मि, महात्मा गांधी स्कूल की शिक्षिका गरिमा चौधरी, डारडू हिन्द, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य लोकेश शर्मा व सहायक आचार्य मंजु सामरिया, जिला शिक्षा अधिकारी भंवरलाल कुमहार, अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी गोपाल लाल मोघा तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।



जालंधर-पंजाब। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दैनिक सवेरा अखबार व चैनल ग्रुप के मुख्य संपादक शीतल बिज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सोनिया, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सुशीला व सोमा माता। साथ ही ब्र.कु. डॉ. रतन लाल वासन, सेवानिवृत्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी, सीएमओ, ब्र.कु. सुरिंदर सचदेवा, सेवानिवृत्त सीए, ब्र.कु. डॉ. महेश डोंगरा, न्यूरोसाइकोलॉजिस्ट तथा अन्य।



नोयडा-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दावी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में ब्र.कु. कीर्ति, ब्र.कु. रश्मि तथा अन्य।



बेगूसराय-बिहार। ब्रह्माकुमारीज प्रभु पसंद भवन द्वारा बरौनी स्थित एनसीसी छावनी में 'माइंड पॉवर एवं थॉट कंसंट्रेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. डॉ. स्वामीनाथन, लेफ्टिनेंट अर्चना कुमारी, लेफ्टिनेंट अजीत कुमार, लेफ्टिनेंट तुषार कुमार, थर्ड ऑफिसर गीतांजलि कुमारी, सी.आई. दीक्षा कुमारी, पूजा कुमारी, एनओ संजय कुमार, सीटीओ करिश्मा कुमारी आदि की उपस्थिति रही।



गुरुग्राम-सर्नसिटी सेक्टर 54(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दावी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में एसआरडब्ल्यू अध्यक्ष कुलदीप राणा, सभासद सोनिया यादव, वार्ड 21, पूर्व सभासद महेश दायमा, मीडिया महामंत्री अजीत यादव तथा अन्य।



बुलंदशहर-डिबाई(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के सद्भावना सभागार में ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित 'सहज युग में मूल्य आधारित पत्रकारिता' विषयक सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. रचना, ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. शान्तनु, भारत विकास परिषद प्रांतीय प्रमुख पी.पी. सिंह, पत्रकार तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।



लखनऊ-जानकीपुरम(उ.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राधा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।



जोधपुर-हाउसिंग बोर्ड(राज.)। केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, भारत सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शील दीदी।



ब्रह्मपुर गिरी रोड-ओडिशा। रक्षाबंधन पर्व पर ओडिशा के वाणिज्य, परिवहन, इस्पात एवं खान मंत्री विभूति भूषण जेना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. माला दीदी।



बड़ौत-उ.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर वन, पर्यावरण, जंतु, उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री के.पी. कृष्णपाल पालिक को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रवेशा, जयंत विहार कौलोनी।



मॉस्को-रूस। रूसी संघ में भारत के राजदूत विनय कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी।



भदोरा-राज.। विधायक संजीव बेनीवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंद्रकांता। साथ हैं ब्र.कु. भगवती, व्यापार मण्डल अध्यक्ष चंपालाल गोयल तथा अन्य।



पांडव भवन-करोल बाग(दिल्ली)। विधायक विशेष रवि को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजय दीदी।



आजमगढ़-उ.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर महाराजा सुहेलदेव विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजना।



रांची-झारखंड। रक्षाबंधन के अवसर पर उप आयुक्त मंजुनाथ भंडारी को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।



टुंडला-जीवनी नगर(उ.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर विधायक प्रेम पाल धनगर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शालू। साथ हैं ब्र.कु. राखी।



दिल्ली-मजलिस पार्क। रक्षाबंधन के अवसर पर टीवी अभिनेत्री अंजलि अरोड़ा को राखी बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राजकुमारी दीदी।



भरतपुर-कृष्णा नगर(राज.)। रक्षाबंधन पर्व पर जिलाधिकारी कमर-उल-जमान चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. योगिता व ब्र.कु. पावन।



मेरठ-उ.प्र.। मेरठ जेल के एडीजी भानु भास्कर को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी। साथ हैं ब्र.कु. आरती।



दिल्ली-ग्रेटर कैलाश। रक्षाबंधन के अवसर पर भारत के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. मेधा।



सरकाघाट-हि.प्र.। धर्मपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक चंद्रशेखर ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उर्मिला। साथ हैं ब्र.कु. ब्रह्माकुमारी बहना।



कोलकाता-प.ब.। रक्षाबंधन पर्व पर कोलकाता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बिस्वस्वरूप चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कानन दीदी।



चित्तौड़पुर-बनारस(उ.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं प्रसिद्ध संस्कृत मोचन मंदिर के मुख्य महंत विश्वम्भरनाथ मिश्र को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरोज।



दिल्ली-लोधी रोड। रक्षाबंधन पर्व पर ओएनजीसी लिमिटेड के अध्यक्ष एवं सीईओ अरुण कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गिरिजा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. पोषू।



देवबंद-गुज्जरवाड़ा(उ.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर राजपति चैस, अधिसासी अधिकारी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा। साथ हैं चौधरी भूपेन्द्र सिंह तथा अन्य।



फैजाबाद-उ.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर सीआरपीएफ कैप में आयोजित कार्यक्रम में सभी जवान भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि बहना।



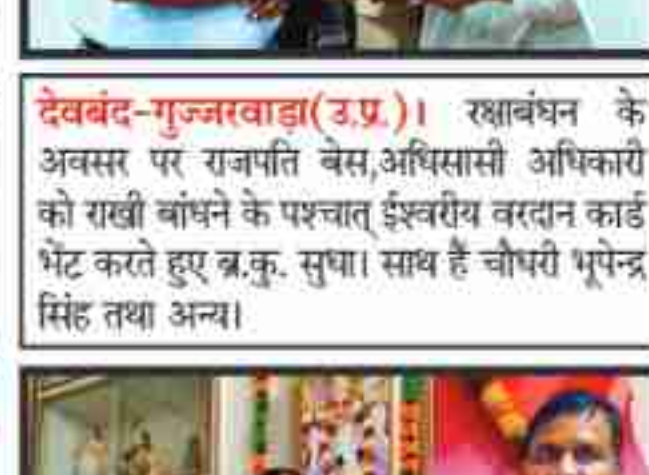
सिवानी मंडी-हरियाणा। नगर पालिका पार्श्व कुलदीप बिश्नोई को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेन्द्र बहना। साथ हैं ब्र.कु. निर्मल।



नैनीताल-उत्तराखंड। रक्षाबंधन के अवसर पर जीवन सिंह नग्याल, अपर आयुक्त, कुमाऊं मंडल, नैनीताल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वीना।



पलिया कलां-उ.प्र.। नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सीता।



कायमगंज-उ.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर लेफ्टिनेंट कर्नल सर्वेश सिंह यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मिथिलेश बहना। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति।



उदयपुर-खनिज नगर(राज.)। मुखेर पुलिस स्टेशन के सीआई रविन्द्र चरण को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीता। साथ हैं अन्य पुलिस अधिकारी।



गया-सिखिल लाइन(बिहार)। रक्षाबंधन के अवसर पर थाई मंदिर बोधगया के बौद्ध भिक्षु किरण लामा को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी।



गानियाबाद-मकनपुर(उ.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर मकनपुर के निगम पार्श्व राधे श्याम त्यागी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं ब्र.कु. रानी।



नरवाना-मॉडल टाउन(हरियाणा)। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में डीएसपी कमलदीप राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा।



शहाजहाँपुर-उ.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर आर्मी के जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चरिता, ब्र.कु. विनीता व ब्र.कु. वर्षा।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर गीता कुंज आश्रम की साध्वी मुक्ता जी महाराज को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं ब्र.कु. मधु।



समस्तीपुर-शाहपुर पटोरी(बिहार)। चुनाव अधिकारी राजीव कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजना।



आरा-बिहार। रक्षाबंधन पर्व पर मेयर श्रीमती इंदु को राखी बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण।



सफीदों-हरियाणा। रक्षाबंधन के अवसर पर मेडिकल ऑफिसर डॉ. प्रदीप कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरती मुआना।



जगाधरी-हरियाणा। सिटी मजिस्ट्रेट पीयूष गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजू।



नागौर-राज.। जिलाधिकारी अरुण कुमार पुरोहित को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनीता।

परमात्म ऊर्जा

स्व-चिंतन और शुभ चिंतक

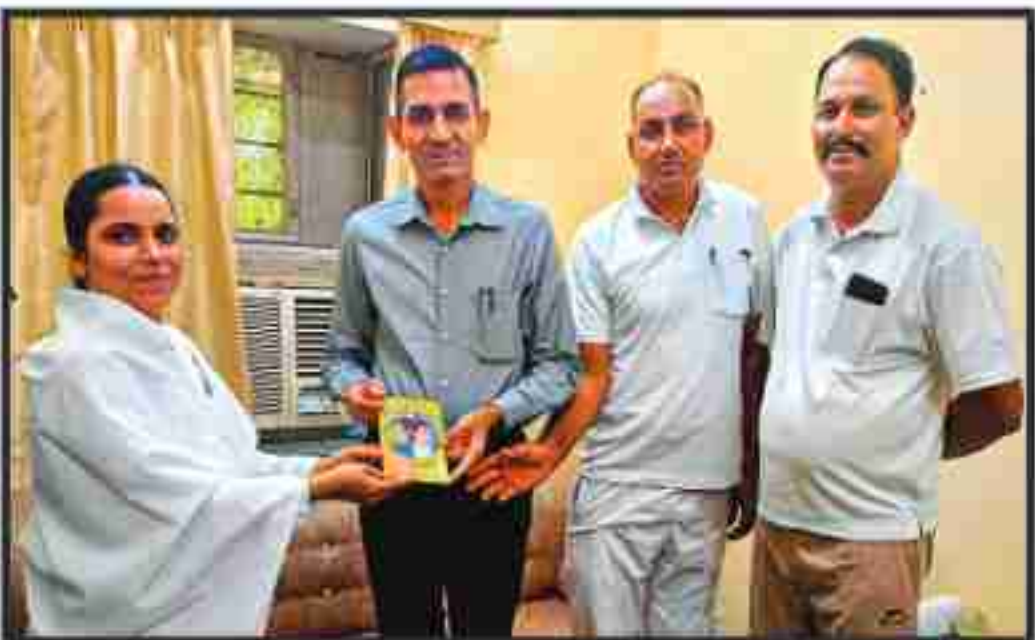


1- स्व चिन्तन अर्थात् जो बापदादा ने 'मैं कौन हूँ' की पहली बताई है, उसको सदा स्मृति में रखना। जैसे बापदादा जो है, जैसा है, वैसा उसको जानना ही यथार्थ जानना है, दोनों का जानना ही वास्तव में सब कुछ जानना है। इसी रीति स्व को भी जो हूँ, जैसा हूँ यथार्थ जो आदि-अनादि, श्रेष्ठ स्वरूप है, उस रूप से अपने आप को जानना और उस रूप के स्व चिन्तन में रहना, इसको कहा जाता है स्व चिन्तन। शुभ चिन्तन अर्थात् ज्ञान रत्नों का मनन करना। रचता और रचना के गुह्य रमणीक राजों में रमण करना। एक, सिर्फ रिपीट करना, दूसरा, ज्ञान सागर की लहरों में लहराना अर्थात् ज्ञान खजाने के मालिकपन के नशे में रह सदा ज्ञान रत्नों से खेलते रहना। ऐसा शुभ-चिन्तन करने वाले स्वतः ही सर्व के सम्पर्क में शुभचिन्तक बन जाते हैं। जो स्वयं दिन-रात शुभ चिन्तन में रहते हैं, वह औरों के प्रति कभी भी न अशुभ सोचते, न अशुभ देखते, न बोलते, न करते उनका निजी संस्कार व

स्वभाव शुभ होने के कारण वृत्ति, दृष्टि सर्व में शुभ देखने और सोचने की स्वतः ही आदत बन जाती है इसलिए हर एक के प्रति शुभचिन्तक रहता है। कमजोर आत्मा को भी सदा उमंग उत्साह के पंख देकर शक्तिशाली बनाते हैं। ऊंचा उठाने के साथ-साथ ऊंचा उड़ाने भी है। कमजोर आत्मा के प्रति सदा शुभ कामना शुभ भावना रख सहयोगी बनाते। 2- शुभ चिंतक अर्थात् ना उम्मीदवार को भी उम्मीदवार बनाने वाले। शुभ चिंतक बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग दे, लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बन जाएंगे। शुभ चिंतक आत्मा, अपने शुभ चिन्तन द्वारा दिल शिकस्त आत्मा को भी दिल खुश मिठाई द्वारा तंदुरुस्त बनाएंगी। शुभ चिंतक आत्मा किसी की कमजोरी जानते हुए भी उनकी कमजोरी को भुलाकर अपनी विशेषता की शक्ति को समर्थी दिलाते हुए उसको भी समर्थ बना देगी। किसी के प्रति घृणा दृष्टि नहीं रहेगी जिससे उनका सभी से प्रेम होगा।



नगर डीग-कटुमार(राज.)। थाने में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. प्रीति, डीएसपी कैलाश जिंदल, हेड कांस्टेबल वीरेन्द्र सिंह तथा अन्य स्टाफ।



जयपुर-कांजी नगर(राज.)। चतुर्थ बटालियन आर.ए.सी. के डिप्टी कमांडेंट चांदमल से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. देविका।

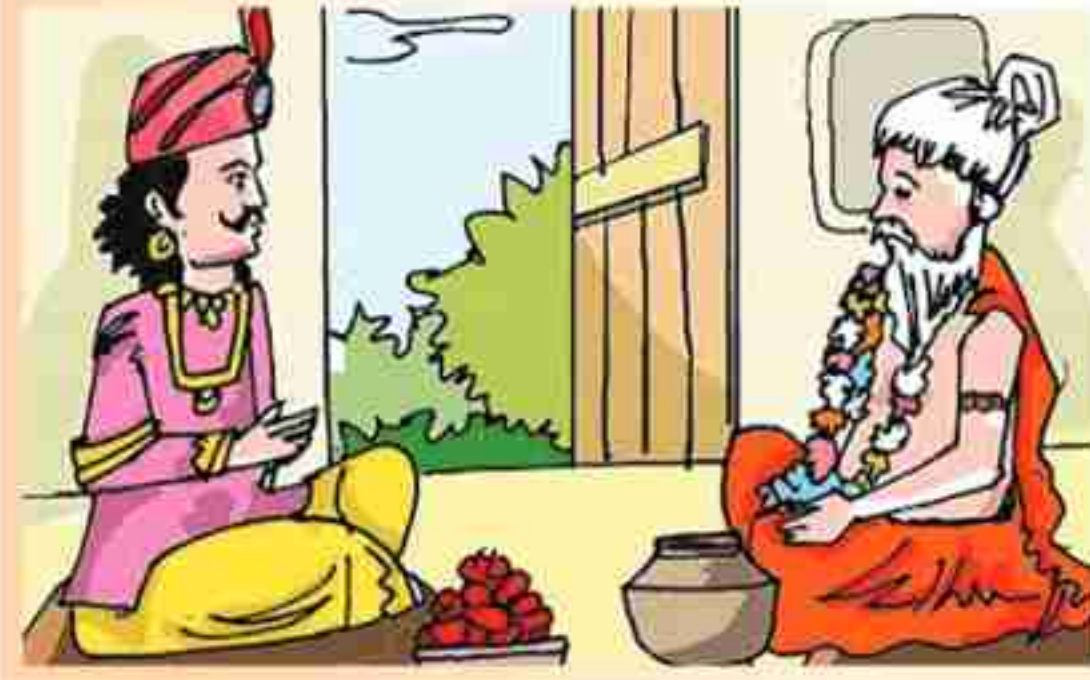
कथा सरिता



बहुत समय पहले की बात है। दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में एक प्रसिद्ध संत रहते थे। संयोगवश एक बार उनके पास राजा का एक सैनिक आया और उनसे पूछने लगा 'आचार्य! सारी दुनिया में स्वर्ग और नर्क की चर्चा होती रहती है, क्या ये होते भी हैं या नहीं?' आचार्य ने ध्यानपूर्वक उसको ऊपर से नीचे तक देखा और पूछा, "तुम काम क्या करते हो?"

उसने उत्तर दिया - "जी, मैं राजा का सैनिक हूँ और देश की रक्षा करता हूँ।" आचार्य ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा,

स्वर्ग और नर्क



'क्या कहा तुमने, तुम सैनिक हो? लेकिन शकल से तो तुम कोई भिखमंगे दिखाई देते हो! तुम्हें जिस किसी ने भी भर्ती किया हो, वह अवश्य ही कोई महामूर्ख होगा।' इतना सुनना था कि सैनिक आग बबूला हो गया

और उसका हाथ कमर पर बाँधी हुई बन्दूक की ओर गया। यह सब देखकर आचार्य बोले, 'अरे! तुम्हारे पास तो बन्दूक भी है। लेकिन चलाओगे कैसे! तुम्हें चलानी भी आती है क्या?

इन शब्दों ने उसकी क्रोध रूपी अग्नि में घी का काम किया। और उसने तुरन्त बन्दूक आचार्य की छाती पर तान दी। तभी आचार्य बोले, 'लो नरक के दरवाजे खुल गए!'

आचार्य के ये शब्द उसके कानों तक पहुँचे भी न थे कि उसने अनुभव किया कि छाती पर बन्दूक तानी देखकर भी यह आचार्य बिल्कुल शान्त और निर्भय बैठा है। उनका यह आत्मसंयम देखकर वह बड़ा विचलित हो गया। देखते ही देखते उसकी क्रोधाग्नि बिल्कुल शांत हो गई और उसने अपनी बन्दूक वापस कमर में टाँग ली। आचार्य ने यह सब देखा और बोले, 'लो, अब स्वर्ग के द्वार खुल गए!'



सिरसा-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के आनन्द सरोवर में आयोजित 'भाग्य/सफलता आपकी मुट्ठी में' कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. बिंदु बहन, राजयोगी ब्र.कु. सूर्य व ब्र.कु. गीता, माउंट आबू, चौधरी देवी लाल यूनिवर्सिटी के उप कुलपति डॉ. विजय कुमार व रजिस्ट्रार डॉ. अशोक शर्मा।



रांची-झारखंड। सुरेन्द्रनाथ सेंटेंरी स्कूल, रांची में आयोजित 'मेन्टल हेल्थ एंड वेल बीइंग' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला देवी, ब्र.कु. इन्दु, ब्र.कु. प्रदीप, प्राचार्या समिता सिन्हा, उप प्राचार्य प्रसेनजीत हाजरा एवं उप प्राचार्या नाना दास।



रावतभाटा-राज। ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल प्रभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत अभियान के उद्घाटन समारोह में उपस्थित भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।



जिंद-हरियाणा। हिसार मंडल के कमिश्नर अशोक गर्ग से स्नेह मुलाकात के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. मोना, ब्र.कु. नीलम एवं ब्र.कु. अश्वनी।



जमशेदपुर-कोल्हान(झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज के यूनिवर्सल पीस फैसल रिट्रीट सेंटर में प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'स्ट्रेस-फ्री एडमिनिस्ट्रेशन' विषय पर आयोजित सम्मेलन के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजु, ब्र.कु. विद्यात्रि, मंडल रेल प्रबंधक तरुण हुरिया, चक्रधरपुर, केएनटी के अध्यक्ष माझीराम जमुंदर व उपाध्यक्ष रामचन्द्र चौईबासा, आईडीटीआर वरिष्ठ अभियंता यशवंत कुमार, सुधा डेयरी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दिनेश कुमार शर्मा, ड्रैक अध्यक्ष राकेश्वर पांडेय, सीआरपीएफ के द्वितीय कमांडेंट राजू रंजन, आदित्यपुर, अधुनी पाँवर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा, यूसीआईएल के उप महाप्रबंधक राकेश कुमार, जादूगोड़ा, करीम सिटी कॉलेज के प्राचार्य मोहम्मद रियाज, जेएमएसटीए के अध्यक्ष शशि भूषण दुबे, रोशनी आई डोनेशन के अध्यक्ष तारू गांधी, महिला गुजराती समाज समाज अध्यक्ष विनीता शाह तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।



मंगोलिया-उलानबटार(एशिया)। भारतीय दूतावास ने उलानबटार के एम.एन. सी.सी.आई. हॉल में इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. इन्ना बहन तथा अन्य प्रतिभागी भाई-बहनों।



दिल्ली-गाजीपुर। ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल प्रभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा करते हुए ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. रीता, स्कूल की उप प्रधानाचार्या रितिक सिंह तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।



उदयपुर-मोती मगरी(राज.)। शिक्षक दिवस के अवसर पर मोती मगरी स्कीम सोसाइटी समिति, नगर निगम उद्यान समिति एवं ब्रह्माकुमारीज संस्थान के द्वारा सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीता, जिला अध्यक्ष गजपाल सिंह जी राठीड़, नगर निगम उद्यान अध्यक्ष महेश चंद्र त्रिवेदी, जनसम्पर्क अधिकारी गौरीकांत शर्मा तथा अन्य।

चलते-चलते बाबा में संशय आने का कारण

ज्ञान की सबसे बड़ी नींव है- 'परमपिता परमात्मा शिवबाबा पर अटूट निश्चय।' जब यह निश्चय दृढ़ रहता है तो साधक हर स्थिति में स्थिर, शक्तिशाली और आनन्दमय रहता है। लेकिन कई बार साधक के मन में संशय आ जाता है। यह क्यों होता है, आइए इसके कारणों और समाधान पर विचार करें।

1. आत्मा की पुरानी वृत्तियाँ और संस्कार- अनेक जन्मों से मनुष्य ने देह-अभिमान, भक्ति-भावना और मायावी आकर्षण में अपना जीवन बिताया है। जब आत्मा ज्ञान मार्ग पर आती है, तो नया संस्कार डालने में समय लगता है। पुराने संस्कार बीच-बीच में उभरकर निश्चय को डगमगा देते हैं। ऐसे समय में हिम्मत व दृढ़ता का हाथ नहीं छोड़ना है।

2. संग का प्रभाव- यदि साधक का संग ऐसी आत्माओं से हो जाए जो संदेह या आलोचना करती हैं, तो मन प्रभावित हो जाता है। संग की शक्ति इतनी प्रबल है कि वह पक्के विश्वास व निश्चय को भी आसानी से डगमगा सकती है। इसलिए बाबा

बार-बार 'संग और वातावरण' की सावधानी रखने की समझानी व इशारा देते हैं।

3. स्व-अध्ययन और गहन की कमी- यदि रोज़ाना मुरली का गहन अध्ययन, मनन-चिंतन और अमल नहीं किया जाता, तो धीरे-धीरे आत्मा की शक्ति घटने लगती है। शक्ति घटने पर माया को अवसर मिल जाता है संशय डालने का।

4. परिणाम की जल्दी- कई साधक चाहते हैं कि बाबा की याद में तुरंत ही गहरी अनुभूति हो या जीवन में तुरंत ही परिवर्तन आ जाए। जब अपेक्षा पूरी नहीं होती तो मन संदेह करने लगता है- 'क्या सचमुच बाबा है? क्या ये

मार्ग सही है?' यह अधीरता भी संशय का कारण है।

5. परीक्षा की घड़ियां- बाबा बार-बार कहते हैं- 'निश्चय बुद्धि विजयी।' लेकिन माया की अंतिम परीक्षाएँ बहुत सूक्ष्म रूप में आती हैं। जब विपरीत परिस्थितियाँ या कष्ट आते हैं, तो कमजोर आत्मा सोचती है कि यदि बाबा है तो मुझे दुःख क्यों मिला? यही सोच निश्चय को कमजोर कर देती है।

इस प्रकार यदि साधक निरंतर अभ्यास, संग और मनन में दृढ़ रहता है तो कोई भी संशय टिक नहीं सकता। निश्चय ही विजय की कुंजी है और बाबा पर अडिग निश्चय रखने वाला साधक हर परिस्थिति में विजयी बन जाता है।

समाधान क्या है?

- रोज़ाना मुरली का अध्ययन और गहन मनन-चिंतन करना।
- बाबा की याद का अभ्यास बढ़ाना और अनुभव लिखना।
- सकारात्मक व निश्चयी आत्माओं का संग करना।
- परिस्थितियों को परीक्षा समझ पाकर संदेह करना।
- धैर्य और श्रद्धा को जीवन का आधार बनाना।

परमात्मा किस बच्चे को अधिक प्यार करते हैं...!

मनुष्य का जीवन ईश्वर का दिया हुआ अनमोल उपहार है। हर बच्चा मासूम और पवित्र होता है, लेकिन यह प्रश्न अक्सर उठता है कि परमात्मा किस बच्चे को ज़्यादा प्यार करते हैं? इसका उत्तर हमें अपने कई पूर्वजन्मों के जीवन के अनुभवों से मिलता है। परमात्मा किसी एक बच्चे से नहीं, बल्कि उन बच्चों से विशेष स्नेह रखते हैं जिनमें कुछ दिव्य गुण होते हैं। इस पहली को हम क्रमबद्ध रूप से समझते हैं-

सच्चाई और ईमानदारी

परमात्मा को सबसे अधिक प्रिय वह बच्चा होता है जो हमेशा सच बोलता है और ईमानदार रहता है। झूठ बोलना, धोखा देना या किसी को कष्ट पहुंचाना परमात्मा को पसंद नहीं। सत्य की राह पर चलने वाला सच्चा बच्चा न केवल प्रभु को प्रिय होता है, बल्कि समाज का भी आदर्श बनता है।

दयालु और करुणामय

जिस बच्चे के हृदय में करुणा और दया होती है परमात्मा उसे अत्यधिक प्यार करता है। जो बच्चा छोटे-बड़े, अमीर-गरीब में भेदभाव नहीं करता, जानवर और प्रकृति से भी प्रेम करता है, वह वास्तव में परमात्मा की नज़र में अनमोल होता है।

सेवाभाव रखने वाला

सेवा, परमात्मा तक पहुंचने का सबसे सरल मार्ग है। जो बच्चे अपने मात-पिता, बड़ों को और साथ-साथ जरूरतमंद लोगों की सेवा करते हैं, वह ईश्वर के प्रिय बन जाते हैं। निःस्वार्थ सेवा करने वाले बच्चों को समाज भी सम्मान देता है और परमात्मा भी उन पर कृपा करते हैं।

नम्रता और विनम्रता वाले

अहंकार, परमात्मा से दूर करता है। लेकिन जो बच्चे विनम्र, सभ्य और आदर करने वाले होते हैं वह ईश्वर के हृदय में विशेष स्थान पाते हैं। नम्रता ही वास्तविक महान बनने का सबसे सरल आधार है।

मेहनती और लगनशील

परमात्मा उन्हीं बच्चों को पसंद करते हैं जो अपने



कर्तव्य को समझते हैं और परिश्रम करते हैं। आलस्य, टाल-मटोल और लापरवाही से ईश्वर प्रसन्न नहीं होते। कर्मठ और लगनशील बच्चा अपने जीवन में सफलता पाता है और परमात्मा की कृपा भी उस पर बनी रहती है।

सर्व प्रति शुद्धभाव रखने वाला

सबसे महत्वपूर्ण गुण है निश्छल भाव, पवित्र भाव। जो निःस्वार्थ व पवित्र भाव से परमात्मा को याद करता है और उनके बताए हुए मार्ग पर चलता है, वह परमात्मा को अत्यंत प्रिय होता है। सर्व के प्रति निर्मल हृदय से शुद्ध व शुभ भाव रखता है उनके जीवन में शान्ति आती है।

परमात्मा सभी बच्चों से प्रेम करते हैं क्योंकि सब उनकी ही संतान हैं। परन्तु विशेष प्रेम उन्हीं से होता है जिनमें सच्चाई, दया, सेवा, नम्रता, परिश्रम और शुभ भाव जैसे गुण होते हैं। ऐसा बच्चा केवल ईश्वर का प्रिय ही नहीं बनता बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। अतः हमें चाहिए कि हम इन गुणों को अपने जीवन में अपनाएं ताकि हम भी परमात्मा के प्रिय बन सकें।



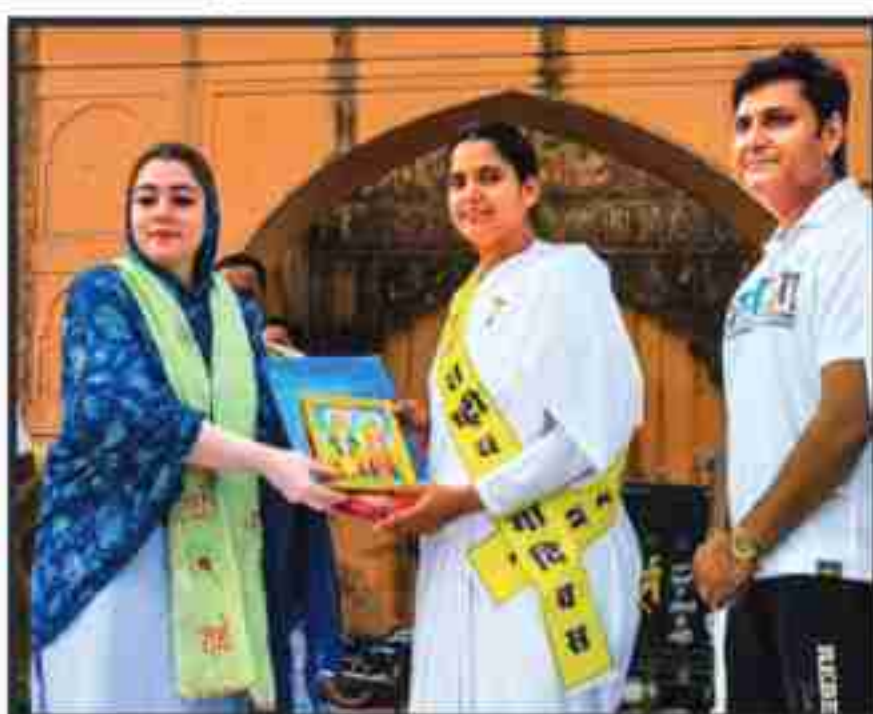
अस्का-ओडिशा। सेवाकेन्द्र द्वारा की जा रही ईश्वरीय सेवाओं के 35वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्मपुर सबजोन इंवांच राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, राजयोगी ब्र.कु. राजु, माउंट आबू, अस्का समन्वाय चौनी शिल्प निगम परिचालन निदेशक सुशांत पंडा, अस्का विज्ञान महाविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष प्रशांत पंडा तथा अन्य अतिथिगण।



दुहवरपुर-उ.प्र.। विधायक जयकिशन साहू को परमात्म संदेश देने के पश्चात् चित्र में साथ हैं ब्र.कु. विमला।



कानपुर-नयागंज (उ.प्र.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आर्यन इंटरनेशनल स्कूल, सेंट पॉल्स इंटर कॉलेज एवं राजकीय इंटर कॉलेज, गोला गंज में आयोजित ध्यान एवं जागरूकता सत्र में सेवाएं करते हुए ब्रह्मकुमारी बहनें।



भरतपुर-डीग (राज.)। कामा पहाड़ी विधायक नोक्षम चौधरी को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।



नगांव-असम। जिला कमिश्नर देवाशीष शर्मा, आई.ए.एस. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता। साथ हैं ब्र.कु. बुलि बहन।



सम्बलपुर-ओडिशा। ज्ञान चर्चा के पश्चात् गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुशांत कुमार दास को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती। साथ हैं प्रो. बिधु भूषण मिश्र, कुलपति सम्बलपुर विश्वविद्यालय एवं प्रो. दीपक कुमार साहू, कुलपति, वीर सुरेन्द्र साई प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सम्बलपुर।



रुड़की-उत्तराखंड। खुशनुमा जीवनशैली विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गीता।



कादमा-हरियाणा। नशा मुक्त भारत अभियान की पांचवी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को नशा मुक्त जीवन जीने की रापथ दिखाते हुए ब्र.कु. ज्योति व ब्र.कु. नीलमा।



लहाख-जम्मू कश्मीर। गुरु पूर्णिमा के अवसर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुदर्शन बहन को पटका पहनाकर सम्मानित करते हुए विधायक आरएस पठानिया, उधमपुर।



बरनाला-पंजाब। ब्रह्मकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए राहत सामग्री गाड़ी को खाना करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिज दीदी, ब्र.कु. पुष्प, ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. सोमा, डॉ. त्रिलोकी नाथ, भगवान दास तथा अन्य ब्रह्मकुमार भाई-बहनें।



दिल्ली-इंदर पुरी। दादी प्रकाशमणि के 18वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान वीरों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बाला।



आज़मगढ़-लालगंज (उ.प्र.)। उपजिलाधिकारी भूपाल सिंह से मुलाकात कर ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

एकाग्रता की नहीं जागरूकता की बात करें

सभी कहते हैं कि मेरा मन नहीं लगता, उस कार्य में जो उसे दिया गया है। लेकिन एक मन ये कहता है कहीं तो हमारा मन लगता है! जिसमें हमारा मन डूबा हुआ होता है, जिसमें हमको रस आता है, जिसमें हमको मजा आता है वहाँ हमारा मन लगता है ना! लेकिन हमारा मन वहाँ नहीं लगता है जो हमारे मन मुताबिक चीज नहीं है। तो ऐसा नहीं है कि हम एकाग्र नहीं हैं, निश्चित रूप से हम छोटे-छोटे कार्यों में जिसमें आपको रस आता है उसमें आप एकाग्र हैं। लेकिन सबसे ज्यादा जरूरत इस समय एकाग्रता की नहीं है, समझ की है, जागरूकता की है कि मुझे क्या चाहिए!

आप हमेशा जीवन को थोड़ा-सा साक्षी भाव से देखेंगे तो आप पाएंगे कि ज्यादातर जीवन में हमने वो किया जो हम नहीं करना चाहते थे। किसी के कहने से किया, किसी के बताने से, किसी के गाइड लाइन देने से किया। लेकिन जो आपकी बेसिक नेचर है, जिसमें आप एक्सपर्ट हैं, जिस चीज में आपको मजा आता है, जिसमें आपको रस आता है, जो आपके लिए बड़ी नॉर्मल सी चीज है, वो आपने नहीं किया। पूरे जीवन सोचते रह गए कि नहीं, मेरी नेचर तो ये करने की थी, मुझे तो ये बनना था लेकिन मैं यह कर नहीं पाया।

इसलिए पहले तो हरेक आत्मा को अपने सहज भाव को जानना जरूरी है कि किसमें वो सहज है, किसमें वो अपने को सही पाता है। तो मनुष्य की

तुष्टि कब होती है? जब हम उसी भाव से जीते हैं जो हमारी बेसिक नेचर है। हम इस दुनिया में जो कुछ भी कर रहे हैं वो मूल्यविहीन है, दुनिया के हिसाब से उसमें आपको पैसा मिलेगा, शोहरत मिलेगी लेकिन आत्म संतुष्टि नहीं मिलेगी। आप वो बन गए जो बनना ही नहीं चाहते थे। सहजता तो इसी में है आप वो करो जो आप करना चाहते थे। जो आपकी बेसिक नेचर है। आज स ह ज भ । व से कुछ ह, आ नहीं तो सभी को देखकर ह म न के कु छ भी कर लिया लेकिन अतृप्त हैं, परेशान हैं। अब आप देखो इस दुनिया में हमारी सहज नेचर क्या है- शांति की, पवित्रता की है सहज नेचर है, है और हमेशा से है। लेकिन हम वो करने लग गए जिसमें हम सहज नहीं हैं। बन भी गये लेकिन हमेशा पछतावा रहा कि मैं संतुष्ट क्यों नहीं हूँ? असंतुष्ट क्यों हूँ? तो आज किसी भी कार्य में हमको इसलिए रस नहीं आता है। जैसे एक उदाहरण के साथ कहा जाये कि जब एक छोटे बच्चे को स्कूल में पढ़ाया जाता है तो हमेशा टीचर बोलता है कि आपका ध्यान आप कंसंट्रेट करो,



- राजयोगी ब.क. अनुज, दिल्ली

एकाग्र करो। और वो बच्चा कहीं पर किसी पक्षी को देख रहा है, किसी ऐसी स्थिति को देख रहा है, जिसमें वो उस बात को फोकस नहीं कर रहा है जो आप करना चाहते हैं। लेकिन ऐसा तो नहीं है कि वो एकाग्र नहीं है, वो एकाग्र है। लेकिन उस चीज पर जिसमें उसकी सहजता है। जो उसकी बेसिक नेचर है।

अब देखो नेचर की नेचर जो होती है, प्रकृति में नेचुरल हम बहुत आराम से बैठ के कोई चीज को देख रहे होते हैं। उस समय तो हमें कोई विधि की जरूरत नहीं पड़ती। ऐसे ही हमारी जो सहज भाव वाली नेचर है वो है शांति की, प्रेम की, इसके अलावा हमारी कोई बेसिक नेचर है ही नहीं। और वो नेचर तब तक हमारे ऊपर लागू नहीं होगी जब तक हम इस दुनिया में इस बात को नहीं पकड़ पाएंगे कि तुष्टि कहाँ है? इसीलिए एकाग्रता का एक अनुपम उदाहरण है जिसमें आपको रस आए, जिसमें आप सहज हों वहाँ नेचुरल आप एकाग्र हो जाएंगे। लेकिन सहज हम हो नहीं सकते, उसका कारण है कि हमको सबसे पहले जागरूकता से जानना जरूरी है कि मुझे करना क्या चाहिए? मैं किसलिए बना हूँ? कौन-सा भाव मेरे अन्दर है? किस भाव से मुझे जीना चाहिए? जब ये सारी बातें हमारे अन्दर पनपेंगी तो परमात्मा की बातों को हम समझ पाएंगे। यही हम हैं और यही हमारा जीवन है। इसलिए हमको एकाग्रता की नहीं, जागरूकता की जरूरत है।

क्रिसमस में छिपा आध्यात्मिक संदेश

आध्यात्मिक दृष्टि से हर त्योहार कोई न कोई गहरा संदेश देता है। क्रिसमस भी केवल उत्सव, उपहार और सजावट का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसमें आत्मा के लिए गहन आध्यात्मिक शिक्षा छिपी हुई है। आध्यात्मिक दृष्टि से उसे देखें तो करीब छह बिन्दु पर विचार करते हैं-

दिव्य जन्म की स्मृति

क्रिसमस हमें याद दिलाता है कि आत्मा का असली जन्म पवित्रता और परमात्मा से जुड़ाव में है। जब हम अपने अस्तित्व को सही मायने में समझते हैं कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ और मेरा सच्चा सम्बन्ध परमात्मा से कैसा है? जैसे मसीह का जन्म अंधकार के बीच प्रकाश लाने के लिए हुआ, वैसे ही हर आत्मा को संगमयुग पर नया जन्म लेना है- आत्म अभिमान की और ईश्वरीय स्मृति में।



त्याग और सेवा का संदेश

क्राइस्ट का जीवन सेवा, बलिदान और त्याग का प्रतीक है। इस दिन हम यह संकल्प लें कि हम आत्मा भी निःस्वार्थ सेवा करेंगे और दूसरों को प्रेम, शान्ति और सहयोग देंगे। यही सच्ची क्रिसमस है। हमें उन उमूलों पर चलकर निःस्वार्थ सेवा कर जीवन को दिव्य बनाना है।

प्रेम और करुणा की शिक्षा

ईसा मसीह ने कहा- सबसे बड़ा धर्म है प्रेम। आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मा का स्वभाव ही

शान्ति, प्रेम और करुणा है। हमें इस भाव और सत्यता को समझना है। उन्हीं दिव्य गुणों के साथ जीवन जीना चाहिए। यह त्योहार हमें स्मरण कराता है कि सच्चा प्रेम आत्म-आधारित है, न कि शरीर-आधारित।

सरलता और पवित्रता का महत्व

मसीह का जन्म एक साधारण गौशाला में हुआ। इससे संदेश मिलता है कि आध्यात्मिकता भव्यता और दिखावे में नहीं बल्कि सरलता और पवित्रता में है। वास्तव में परमात्मा ने भी हमें सादगी और मर्यादा की जीवनशैली की समझानी दी है। हमारा भी यही उद्देश्य है कि हम इसे साकार कर औरों के आगे आदर्श प्रस्तुत करें।

आन्तरिक प्रकाश का दीप

क्रिसमस आशा और नये युग की तैयारी का संदेश भी देता है। जैसे लोग इस दिन पर नये संकल्प लेते हैं, वैसे ही हमें संगमयुग पर परमात्मा से शक्ति लेकर स्वर्णिम युग की तैयारी करनी है।

क्रिसमस का त्योहार बाहरी आनन्द के लिए नहीं है, बल्कि आत्मा को यह याद दिलाता कि पवित्र जीवन लेकर सेवा, त्याग, प्रेम, सरलता और योग की रोशनी से जीवन को भरना है। जब हम इन छह आध्यात्मिक पहलुओं को अपनाते हैं तभी क्रिसमस का सच्चा अर्थ पूरा होता है और आत्मा, परमात्मा की संतान अनुभव करती है।

प्रश्न- निगेटिव, व्यर्थ संकल्प मुझे बहुत चलते हैं। इसके लिए क्या अभ्यास करें कि मन पॉजिटिव हो जाए?

उत्तर- बहुत लम्बे समय से चलाए होंगे। बाबा मुरलियों में इसका उत्तर देते हैं कि सी नो ईविल, हियर नो ईविल और टॉक

नो ईविल। ये तीन चीजों पर बैन लगा दें, जिनका भी ये प्रश्न है। नेट पर भी बहुत गन्दी चीज आजकल देखते हैं लोग, बुरी-बुरी चीजें सुनते हैं फिर बोलते भी हैं। उससे निगेटिव संकल्प बहुत चलते हैं। निगेटिव संकल्पों का तो बहुतों के पास एक सागर है और उसका कारण एक नहीं होता। देहधारियों के प्रति आकर्षण उसका एक साधन कारण, ईर्ष्या-द्वेष एक कारण है। हम किसी का अपमान करें या कोई हमारा अपमान करे ये बहुत बड़ा कारण है। व्यावहारिक तौर पर घरों में बहुत लोग असफल हैं, उनको व्यवहार करना नहीं आता है, एक-दूसरे की भावना को हर्ट करते हैं वो भी एक कारण है। तो ईश्वरीय ज्ञान बढ़ाना है आपको अपना ताकि आपका चित्त शान्त होने लगे और जो बाबा का ज्ञान मिलता है उसका थोड़ा-थोड़ा मनन करना। मनन करना माना उसको सारे दिन में याद रखना। आप ये संकल्प कर लो कि आज की मुरली से मुझे 5 प्वाइंट्स लिखकर अपने पास रख लेनी हैं और उन्हें बीच-बीच में पढ़ लेना है ताकि उनपर चिन्तन चलता रहे। इससे ये व्यर्थ धीरे-धीरे समाप्त होगा। साथ-साथ अपने स्वमान का अभ्यास बहुत करते रहें। जैसे-जैसे आपको रियलाइजेशन होगा मैं एक महान आत्मा हूँ, जैसे-जैसे आपको समझ में आएगा कि मैं ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न हूँ, मैं वही इष्ट देवी हूँ जिसकी मंदिरों में पूजा हो रही है, मुझे विश्व का कल्याण करना है तो ऊंचाई बढ़ेगी। स्पिरिचुअल लेवल हाई होगा और ये व्यर्थ, ये सब नीचे की चीजें हैं पीछे छूट जाएंगी।

प्रश्न- मैं बारहवीं कॉमर्स की स्टूडेंट हूँ।



मन की बातें

मैं जब भी पढ़ाई करती हूँ तो एक बार पढ़ने से ध्यान में नहीं रहता और अगर पढ़ाई में किसी भी बात को मैं समझ पाती हूँ तो जल्दी भूल भी जाती हूँ, ऐसा क्यों होता?

उत्तर- देखिए ये सब बुद्धि का विषय है। और मैं एक और चीज कहूँगा सबके लिए कि कड़ियों ने अपनी बुद्धि में इतना माल भर लिया है कि नया माल ठहरता ही नहीं है। इसीलिए पुराने माल को डिलीट करना पड़ेगा। जैसे लैपटॉप में जो चीजें यूज की नहीं होती तो उन्हें डिलीट करते हैं तभी वो ठीक से काम करता है। तो अपनी बुद्धि को भी स्वच्छ करना होगा और उसका तरीका है- अच्छे स्वमानों का अभ्यास। ज्ञान की प्वाइंट्स को याद करें बार-बार तो बुद्धि को एनर्जी मिलने लगेगी। इससे जो बड़ चीजें बुद्धि में रखी हैं उससे बुद्धि की कई सूक्ष्म शक्तियां डैमेज हो रही हैं। तो सवरे उठकर 5 बार याद करना मैं बुद्धिवान हूँ, मेरी मेमोरी बहुत सुन्दर है, श्रष्ट है, मुझे हर अच्छी चीज याद रहती है। बहुत गुड फीलिंग के साथ करेंगे। जो सोयी हुई शक्तियां हैं बुद्धि की वो जागृत हो जाएंगी और काफी मदद

मिलेगी। रोज किसी भी टाइम आधा घंटा मेडिटेशन भी करना है। नौद और भोजन का भी बैलेंस रखना है। कई बच्चे बहुत पढ़ने के लिए नौद कम कर देते हैं। बारहवीं तक के बच्चों के लिए विशेष रूप से 7 घंटे तो होनी ही चाहिए। नहीं तो ब्रेन उससे भी वीक होता है। भोजन छोड़ देते हैं फिर भूख लगेगी तो ज्यादा खा लेंगे। तो इससे भी बुद्धि बहुत डल हो जाती है। तो प्रॉपर डाइट और प्रॉपर स्लीप दोनों ही बहुत ही जरूरी हैं बुद्धि और मेमोरी के लिए।

प्रश्न- मुझे कोविड हुआ था लेकिन उसके बाद से बिल्कुल भी कंसंट्रेशन नहीं हो पा रहा है और ना ही मैं ध्यान लगा पा रही हूँ। प्लीज बताएं कि क्या करें?

उत्तर- एक तो पानी चार्ज करके पीएं और मुझे ऐसा लगता है कि मन में डर समा गया है क्योंकि उन दिनों जब ये शुरू हुआ था तो बड़ा ही भय का माहौल बना हुआ था चारों ओर। लोग ये कहने लगे कि लोग कोविड से कम लेकिन भय से ज्यादा मर रहे हैं लोग। तो आप अपने को चेक कर सकते हैं कहीं आपके अन्दर भय तो नहीं समा गया है और समा गया हो तो सवरे उठकर 108 बार कुछ दिन लिख लेना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, निर्भय हूँ। 108 बार ज्यादा लगे तो 21 बार से शुरू करना फिर धीरे-धीरे बढ़ाना 10-10 रोज। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, निर्भय हूँ। और मेडिटेशन आप 10-10 मिनट रोज कर लें चार बार सारे दिन में और ईश्वरीय महावाक्यों को ज्यादा पढ़ें।

प्रश्न- मेरा प्रश्न ये है कि मेरे युगल ज्यादातर शराब पीकर ही आते हैं। अब पुलिस में हैं, पहले आर्मी में थे। कभी कोई बहाना, कभी कोई बहाना। मैं ज्ञान में तीन साल से हूँ, वो शुरू से ही ज्ञान के खिलाफ हैं। मैं क्या करूँ कि वो भी ज्ञान में आ जाएं, सहयोगी हो जाएं और उनकी ये जो शराब की लत है वो छूट जाए?

उत्तर- देखिए उनको अगर ये स्मृति आ जाए कि वे देवकुल की आत्मा हैं तो

ये व्यसन छूट जाएगा। इसलिए भोजन बनाते समय मैं परम पवित्र आत्मा हूँ ये बहुत याद करेंगे। आधा घंटा उनके लिए मेडिटेशन करेंगे रोज। और तीसरी बात सवरे जब वो सोये हों पांच बजे के लगभग तो उसे आत्मा देखकर पांच मिनट तक वायब्रेशन्स देना और फिर उसे आत्मा देखकर अच्छी बातें कहना मन से। बहुत अच्छी आत्मा हो, देवकुल की आत्मा हो, तुम तो देवता थे, बहुत समझदार हो, बहुत बुद्धिवान हो ये व्यसन, शराब छोड़ दो। लास्ट में जैसे ये कमांड छोड़ दो। रोज इस टाइम करना है 21 दिन। तो उनका सबकॉन्शियस माइंड ले लेगा और जब उठेंगे तो उनको इच्छा होने लगेगी कि अब मैं ये छोड़ दूँ। और ज्ञान भी दे दो उसी तरह आप उनको। इस टाइम भगवान आये हैं तुम उनसे अपना अधिकार ले लो। तुम इस समय प्रभु मिलन कर सकते हो। सृष्टि में सबसे सुन्दर समय चल रहा है। पहचानें आये हुए भगवान को। वो भी उठते ही उनकी बुद्धि में जागृत होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की सुली और अच्छी रात के लिए देखें अपना अपना 'पीत ऑफ माइंड' और 'प्रोटेक्शन' चैनल

AWAKENING The Brahma Kumaris TV Channel is available on	
TATA sky	Channel No. 1084
JioTV	Channel No. 1060
GTPL	Channel No. 578
IN	Channel No. 996
NDTV DIGITAL	Channel No. 984

CHANNEL NUMBER

1084 Tota Sky	996 Videocall 021
1060 Jio TV	578 Airtel Digital
1087 Dish TV	984 Sun Direct

For C-Rated Dish Settings (Phone or Hand Tv.)
Frequency Details: Satellite - BSAT 30, Orbital Position - 93°E
Downlink Frequency - 4054 Mhz, Polarization - Horizontal
Symbol Rate - 12.00 MSPS, Modulation - QPSK - 52 BPSK
FEC - 5/6, Compression - MPEG-4

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे

आपका सुखार्थ, राजयोग, शरीर प्रवेश, हॉपी लिखिंग, हैपिनेस इन्डक्स, बीता शब्दों आध्यात्मिक रहस्य, मेरा प्रेम, कल्याण सूर्यस्य, रात योग, आत्मा का पुरुषार्थ, आत्म-सुरक्षा

विश्व नाटक में तुम हीरो एक्टर हो...!!!

ज्ञान के सागर परम शिक्षक ने जो स्वयं आकर हमें सम्पूर्ण ज्ञान दिया, उसमें एक ज्ञान सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का भी है। आदि क्या थी इस सृष्टि चक्र की, बीच में क्या-क्या हुआ, अंत में क्या होगा, कैसा होगा, तो इसकी तुलना भगवान ने एक फिल्म से, एक नाटक से, एक ड्रामा से की है। ये धरा रंगमंच है। तुम आत्माएं एक्टर हो। तुम्हारा घर परमधाम है, ब्रह्मलोक। वहाँ से तुम आये हो। ये जो शरीर तुमने पहना है, ये तुम्हारा वस्त्र है। इसको पहनकर तुम अपना पार्ट यहाँ बजा रहे हो। सभी मनुष्यात्माएं एक्टर हैं। सभी को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है, जैसे फिल्म में मिल जाता है। जैसे किसी सीरियल में मिल जाता है।

तो देखिए ये विश्व एक विशाल नाटक है। और सबका पार्ट रिकॉर्डेड है आत्मा में। शरीर रूपी ड्रेस पहनकर सभी आत्मा अपना पार्ट यहाँ प्ले कर रही हैं। इस विश्व ड्रामा के बारे में कई बातें बाबा ने हमें गुह्य रूप से बता दी हैं। कई प्रश्न किया करते हैं कि क्या इस ड्रामा को हम चेंज कर सकते हैं? पर चेंज करने की जरूरत तो तब पड़े जब वो खराब हो। भगवान ने कह दिया कि ये ड्रामा एक्ज्यूट चल रहा है। ये ड्रामा मुझे बहुत प्रिय है। ये ड्रामा क्रियेटर को प्रिय है तो तुम सबको भी तो प्रिय होना चाहिए। इसमें सबकुछ बहुत अच्छा चल रहा है। चिंतन करें कि रात भी अच्छी, दिन भी अच्छा। ये हार-जीत और सुख-दुःख का खेल चल रहा है। इसमें सभी मौसम आते हैं। सभी अच्छे हैं। बरसात भी अच्छी, गर्मी भी अच्छी, तो सर्दी भी अच्छी, इसका सम्पूर्ण ज्ञान हमें दिया है। और हमारा दृष्टिकोण दूसरों के लिए बदल गया।

सबसे पहली चीज हमें पता चल गई कि इस ड्रामा के प्रारम्भ में जो हमारा पार्ट था वो देवी-देवता के रूप में था। हम सब देवी-देवता धर्म की महान आत्माएं हैं। तब हम सम्पूर्ण पवित्र थे, ये संसार स्वर्ग था। ये धरा भरपूर थी। यहाँ अथाह सम्पदा, सोना, हीरे, मोती, माणिक, सब बहुत ज्यादा थे। उस समय केवल भारत ही था। भारत बहुत-बहुत साहूकार इतना साहूकार कि सोने के तो महल और घर बनते थे। लेकिन जो साधारण भी देवता होगा उसके भी चांदी के घर, दरवाजों पर सोना मंदा हुआ, जो बिल्कुल साधारण है। और जिन्होंने संगमयुग पर श्रेष्ठ भाग्य बनाया है उनके पास तो सोना ही सोना होगा। घर भी सोने का, ईंटें भी सोने की, छत भी सोने की, दरवाजे भी सोने के, बहुत सुन्दर



वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

विश्व रंगमंच पर आप ही हीरो एक्टर हैं, यह राज परमपिता परमात्मा ने हमें याद दिलाया। हर कोई अपना-अपना पार्ट बजा रहा है। इसी साइकलिंग में खेल चल रहा है। आप इस दृष्टि से सबको देखें तो किसी का भी कोई दोष नहीं है। इस वास्तविकता को जानकर निश्चिंत रहें, अचल रहें, स्थिति को श्रेष्ठ और स्थिर बनाएं।

आर्किटेक्ट, बहुत सुन्दर डिजाइन, ऐसे वहाँ मकान होंगे। जिन्हें देखते ही मन आनंदित हो जाए। तो बताया कि तुमने ही विश्व पर राज किया था तब, तुम्हारे अन्दर बहुत इनर पॉवर और इनर टैलेंट था।

कई इस ड्रामा को लेकर ये कहते हैं कि अगर बनी बनाई है तो फिर पुरुषार्थ क्यों करें? पार्ट है वो तो हमारा, पुरुषार्थ करना भी तो पार्ट है ना! वो भी फिक्स है, वो भी हमें करना ही होगा। इसलिए ये कभी नहीं सोचना है कि पुरुषार्थ क्यों करें? ये संसार का खेल पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल, कर्म और भाग्य इससे ही तो चल रहा है। इसी साइकलिंग में खेल चल रहा है। तो आप इस दृष्टि से सबको देखें जरा कि सभी आत्माएं अपना-अपना पार्ट प्ले कर रही हैं। किसी का यहाँ दोष नहीं है, पक्का करें अपने में।

अभी मान लो रामायण में रावण का पार्ट

बजाया, वो पण्डित अरविंद, वो जब हमारे यहाँ आये तो लोग उसका मजाक करते थे कि बहुत क्रोध करते हैं आप तो, उन्होंने कहा कि मुझे तो क्रोध आता ही नहीं, मैं तो शांत हूँ। लेकिन वो रावण के रूप में मुझे पार्ट प्ले करना था तो उसकी एक्टिंग करनी थी। वो क्रोध मुझे दिखाना था। तो देखिए दो रूप हो गये ना, दो फेसेज हो गए, एक उसका रियल फेस वो पण्डित अरविंद बहुत शांत, एक अच्छा व्यक्ति, दूसरी ओर उसको मिला हुआ पार्ट रावण का जिसमें उसका उग्र रूप दिखाया है। जिसमें बहुत क्रोधी और अभिमानी उसको दिखाया है, तो अगर कोई पण्डित अरविंद को देखकर ये सोच ले कि ये व्यक्ति तो बड़ा घमण्डी है, बड़ा अहंकारी है, क्रोधी है तो ये गलत होगा ना! तो इसी तरह इस ड्रामा के प्रति, लोगों के प्रति जो दृष्टिकोण है वो बदल जाएगा। इसको देखकर जो भिन्न-भिन्न क्वेश्चन उठते हैं, भगवान ने ऐसा क्यों रचा, ये मनुष्य ऐसा क्यों कर रहे हैं, इन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

हम जानते हैं पाप बहुत बढ़ गया है। क्रिमिनलिटी बढ़ गई है, अत्याचार, वायलेन्स सब बहुत बढ़ा हुआ है। और एक अच्छे व्यक्ति के मन में ये प्रश्न उठता ही है कि ये क्यों? इस समझदार मनुष्य को आखिर हो क्या गया? जो बात-बात में झगड़ने लगा है, आन्दोलन होने लगे, पत्थरबाजी होने लगी है, ये क्या होने लगा है इस इंसान को! क्या धर्म यही सिखाते हैं? मनुष्य का चिंतन तो चलता है। पर जो ज्ञानी, जो ब्रह्मावत्स इस ड्रामा के ज्ञान को पूरी तरह जान गए हैं। उनका चित्त शांत रहता है कि ये खेल पूरी तरह एक्ज्यूटली चल रहा है। इसमें जो हो रहा है वही सत्य है और कर्म के अनुसार, समय के अनुसार वही तो होना चाहिए। देखिए कितनी गहरी बात है। जो हो रहा है, वही एक्ज्यूट है, वही सत्य है, और वही होना चाहिए। तो एक बहुत सुन्दर चीज हम सबको मिलती है इस विश्व के ज्ञान में, चित्त शांत होता है। क्या, क्यों की उलझन से हम मुक्त हो जाते हैं और अपने श्रेष्ठ कर्म में लग जाते हैं। अपने भविष्य को सुन्दर बनाने में लग जाते हैं।

ये हमें नहीं सोचना है कि हमारा भविष्य तो सुन्दर था ही, देवी देवता थे हम पुरुषार्थ क्यों करें! क्योंकि वो सुन्दर था ही इसलिए क्योंकि इस समय हमने वो पुरुषार्थ किया था, वो हमें रिपीट करना ही है। तो ड्रामा के ज्ञान से अपने चित्त को पूरी तरह शांत करें।



गुरुग्राम-सेक्टर 4 (हरियाणा)। नई दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. आशा को 'राज्य शिक्षक पुरस्कार 2025' पुरस्कार भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, भारत सरकार के केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सुद तथा अन्य।



जयपुर-श्रीनिवास नगर (राज.)। राजस्थान की माननीय उपमुख्यमंत्री दिशा कुमारी से मुलाकात कर प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमलता।



शाहजहांपुर-उ.प्र.। उत्तरप्रदेश के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना को सीनियर सिटीजन कार्यक्रम में पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. चरिता बहन। साथ हैं ब्र.कु. रीना।



चांदपुर-उ.प्र.। उत्तरप्रदेश के पूर्व परिवहन मंत्री व विधान परिषद सदस्य अशोक कटारिया से मुलाकात कर उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. साधना। साथ है ब्रह्माकुमार भाई।



मेरठ-हापुड़ (उ.प्र.)। लोकसभा सांसद अरुण गोविल से उनके कार्यालय पर स्नेह मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. आरती एवं ब्र.कु. वृजेश।



उकलाना मंडी-हरियाणा। विधायक नरेश सेलवाल से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. दीपक, मांउट आवु, ब्र.कु. लक्ष्मी एवं ब्र.कु. ईश्वर सोनी।



कूच बिहार-गुंजाबरी (प.ब.)। शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभाशुभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सम्पा, सिस्टर रिखा, प्रोफेसर कार्तिक जी, प्रोफेसर हिमांशु, प्रिंसिपल बीदुर एवं हेड मास्टर अनन्त जी।



चक्रधरपुर-झारखंड। ब्रह्माकुमारीज पाठशाला परिसर में मधुसूदन पब्लिक स्कूल के निदेशक बलराज हिन्दवार के नेतृत्व में शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में संचालिका डॉ. ब्र.कु. मानिनी बहन, ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. ओडिया तथा अन्य भाई-बहनें।



बहादुरगढ़-सेक्टर 7 (हरियाणा)। विश्व बंधुत्व दिवस पर राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में सभा को सम्बोधित करते हुए नगर परिषद की चेयरपर्सन श्रीमती सरोज रमेश राठी। मंचासीन हैं ब्र.कु. विनीता, ब्र.कु. अंजलि, कर्मवीर राठी एवं राजपाल जांगड़ा।



दिल्ली-ईस्ट विनोद नगर। ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल प्रभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नशा मुक्त भारत बनाने व जन-जन को जागरूक करने के लिए निकाली गई रैली में ब्रह्माकुमार भाई-बहनें। रैली के माध्यम से लगभग 1000 से अधिक भाई-बहनों ने नशा से मुक्त होने का वायदा किया।



दिल्ली-पीतम्पुरा। दिल्ली की माननीया मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से ज्ञान चर्चा करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. प्रतीक तथा अन्य।



मधुबनी-बिहार। श्रीमद्भगवद् गीता के अंतिम सत्र में शिवांगी की आरती कर पूजा करते हुए पूर्व उद्योगमंत्री सह विधायक समीर महासेठ। साथ हैं ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. संगीता एवं गणमान्य अतिथिगण।



नाहन-हि.प्र.। 'विश्व एकता एवं विश्वास हेतु ध्यान' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए सबजोन प्रमुख महादेव नगर गुजरात, कला एवं संस्कृति प्रभाग और युवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. सुशील, लोकसभा सांसद सुरेश कश्यप, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल एवं संजय आहूजा, एमडी इन्टीग्रेटेड लैबोरेट्रीज प्राइवेट लिमिटेड।



दिल्ली-कृष्णा नगर। विधायक डॉ. अनिल गोयल से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनु तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।



गढ़दीवाला-पंजाब। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर आयोजित झांकी उद्घाटन पश्चात् विधायक जसवीर सिंह राजा गिल को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. जसवीरत व ब्र.कु. सोमा। साथ हैं अन्य अतिथिगण।



झुंझुनू-राज.। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में ब्र.कु. अमृत दीदी, ब्र.कु. साक्षी, सीएमएचओ डॉ. छोटेलाल गुर्जर, उपभोक्ता पारितोषिक आयोग अध्यक्ष मनोज मित्त, डॉ. पितराम सिंह गोदारा, पूर्व चीफ इंजीनियर मालीराम वर्मा, प्रभारी पवन सैनी, परमेश्वर हलवाई तथा अन्य की उपस्थिति रही।



यहाँ समाज सुधार का महासंगम केन्द्र- शंकराचार्य

यहाँ जो प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के माध्यम से बनाई गई व्यवस्था में जो राजयोग है वो अतुलनीय है। इसके माध्यम से समाज के हरेक वर्ग को सुधारने का कार्य किया जा रहा है और उनके जीवन को ऊँच स्तरीय बनाने का जो तरीका है ये अनुपम है। यहाँ त्याग, सेवाभाव व समर्पण से किया जाने वाला कार्य निश्चित ही समाज को बल प्रदान करेगा, ये कहना है आदि शंकराचार्य त्रिकाल भवंता सरस्वती जी महाराज का। उन्होंने आवृत्त स्थित ब्रह्माकुमारी संस्थान मुख्यालय के डायमंड हॉल में त्रि-दिवसीय अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन में व्यक्त किया अपना अनुभव। उनके अनुभव के कुछ अंश उन्हीं के शब्दों में यहाँ प्रस्तुत हैं...



आदि शंकराचार्य जगतगुरु त्रिकाल भवंता सरस्वती जी महाराज-

ब्रह्माकुमारी के प्रांगण में आयोजित अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन में जो राजयोग का, परमात्म ज्ञान का, अपने को पहचानने का, अपने जीवन को सरल बनाने का, अपने जीवन को आनंदमय सफल बनाने का, अपने जीवन को सफल बनाकर दूसरों के जीवन सफल बनाने का, इसकी अति सुन्दर व्यवस्था है। भाषा, भोजन जो भी यहाँ पर संस्थान के अलग-अलग 19-20 विंग्स हैं, सभी अपनी-अपनी जगह पर सेवा, समर्पण और प्रेम से परमात्मा के बताए हुए मार्ग पर चल कर रहे हैं। ये मुझे अति सुन्दर अनुभव हुआ, इस अनुभव के मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं, जिसको मैं बयां कर सकूँ।

यहाँ ब्रह्माकुमारी बहनों की जो त्याग, तपस्या, सेवा, समर्पण और प्रेम का भाव है, वो अतुलनीय है। परमपिता परमात्मा ने जो

नारियों को इतना ऊँचा स्थान दिया है, ये भी अतुलनीय है। ब्रह्मा बाबा का त्याग, तपस्या, संघर्ष, सेवा और समर्पण का प्रत्यक्ष रूप यहाँ देखने को मिल रहा है। मेरा भी जीवन आदि शक्ति की पुनर्स्थापना के लिए है जो बाबा का मिशन है, वही मिशन बाबा की कृपा से मेरा भी है। बस फर्क इतना है, बाबा ने श्वेत वस्त्र में बताया, मैं भगवा वेष में हूँ।

यहाँ समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों को जो सुधारने व चरित्रवान बनाने का कार्य चल रहा है ये सिर्फ सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। जो यहाँ आयेगा वो निश्चित रूप से अपना जीवन सफल करेगा और खुद के कल्याण के साथ-साथ पूरे मानव समाज की आत्माओं का कल्याण कर उनका जीवन सफलता की ओर प्रेरित करेगा। यहाँ शान्तिवन के मुख्यालय के मनमोहिनीवन

परिसर में जो गॉडलीवुड स्टूडियो है उसके माध्यम से बनाई हुई ब्रह्माबाबा के पूरे जीवन की कहानी को डेढ़ घंटे की डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से हमने देखा। अति सुन्दर व्यवस्था है यहाँ, संस्थान का जो पीस ऑफ माइंड चैनल है, उसके माध्यम से पूरे विश्व में परमात्म ज्ञान व शान्ति फैलाने का कार्य हो रहा है।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी एवं राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी व अन्य सभी जो हमारी समर्पित बहनें हैं, जो मानव कल्याण की सेवा में लगे हुए हैं उन सभी के लिए मैं कोटि-कोटि भगवान से, परमपिता शिवबाबा से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी दीर्घ आयु हो, स्वस्थ रहें और मानव मात्र को देवतुल्य बनाने का ऐसे ही प्रेरणादायी कार्य करती रहें।



मथुरा-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारी संस्थान के खेल प्रभाग एवं फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस व खेल दिवस के अवसर पर आयोजित 'जागरूकता साइकिल रैली' में ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. मनोहर, ब्रह्माकुमारी खेल प्रभाग के मुख्यालय संयोजक व मुख्य ट्रेनर ब्र.कु. जगवीर सिंह, भारत के प्रसिद्ध साइकिलिस्ट रिटायर्ड बिर्गेंडियर विक्रम सिंह, साइकिलिस्ट मदन लाल, साइकिलिस्ट योगेन्द्र सिंह, मथुरा रिफाइनरी के सुरक्षा अधिकारी अशोक कुमार, वित्त अधिकारी ब्र.कु. आलोक, प्रोडक्शन इंजीनियर नवीन प्रकाश, डॉ. अजीत आदि की उपस्थिति रही।



मऊ-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा पुलिस लाइन में 'राजयोग द्वारा सम्बन्धों में मधुरता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला, वरिष्ठ पुलिस अधिकारीगण तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।



करेली-राज.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नगर पालिका में आयोजित कार्यक्रम में सीएमओ सहित सभी अधिकारियों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।



कुराली-पंजाब। ब्रह्माकुमारी के मेडिकल प्रभाग के नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत गुरु हरकृष्ण पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक करते हुए ब्र.कु. स्वराज बहनें तथा अन्य।



चिरकुंडा-झारखंड। सीआईएसएफ कैम्प में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पिंकी, ब्र.कु. अर्चना तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें, सीआईएसएफ के जवान भाई एवं अधिकारीगण।

संगमयुग को सफल बनाने की विधि

आज का समय अर्थात् संगमयुग, मानव जीवन का सबसे पवित्र और मूल्यवान काल है। यह युग वह अलौकिक संगम है जहाँ एक ओर पुराना कलियुग समाप्ति की ओर है और दूसरी ओर नया सतयुग आरम्भ होने वाला है। यह समय परमात्मा से मिलने, आत्मा को सशक्त बनाने और



भविष्य के दिव्य जीवन की नींव रखने का अनुपम अवसर है। जो आत्माएं इस युग की महत्ता को समझती हैं, वो जीवन को श्रेष्ठ दिशा में मोड़कर स्वयं और संसार दोनों के लिए कल्याणकारी बन जाती हैं। जिन्होंने ये अच्छी रीति समय के महत्व को जाना है, समझा है वे कभी भी इसे व्यर्थ नहीं गंवायेंगे, वह हर सेकण्ड सफल करते हैं। ऐसा सुन्दर समय मनुष्य को पूरे जीवन चक्र में नहीं मिलता।

संगमयुग का महत्व

संगमयुग केवल कुछ वर्षों का समय नहीं है, बल्कि यह आत्मा की

संगमयुग को उत्तम बनाने की विधि

परमपिता परमात्मा ने मनुष्य की चलती जीवन को बदलने का बीड़ा उठाया है। हम सुबह से शाम तक जो भी कर रहे हैं उसमें बदलाव कर दिव्यता की ओर ले जाते हैं। इसलिए परमात्मा ने दिनचर्या को बहुत ही सिस्टमैटिक बनाया है जहाँ मनुष्य के न सिर्फ कर्मकर्ता बल्कि कर्म को दिव्य कर्म बनाने का उपाय बताया है-

नियमित अमृतवेला योग- दिन की शुरुआत बाबा के मिलन से हो। यही शक्ति का मुख्य स्रोत है।

पूरी व्रण और मनन विनम- बाबा का ज्ञान आत्मा की दिशा तय करता है। इसे सुनना और जीवन में लागू करना सबसे आवश्यक है।

पवित्रता और मर्यादाएं- संगमयुग में पवित्रता आत्मा का सबसे बड़ा आभूषण है। मर्यादाओं का पालन जीवन को अनुशासन और शक्ति देता है।

सेवा और दान- इस समय केवल अपने लिए नहीं, बल्कि विश्व कल्याण की भावना से सेवा करनी चाहिए। सेवा आत्मा को दोगुनी शक्ति देती है। तत्काल में खुशी का भी अनुभव करते हैं। देने के संस्कार उनमें पल्लवित होते हैं। जिससे वे देवतुल्य बनते हैं।

तत्कालिक संकल्प और स्वप्न- मैं आत्मा हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ- ऐसे स्वप्न आत्मा को निरन्तर ऊंचा अनुभव कराते हैं।

भाग्य रेखा बदलने का स्वर्णिम अवसर है। यहाँ आत्मा का परमात्मा से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकती है। यह वह दुर्लभ समय है जब शिवबाबा ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाते हैं। साथ ही संगमयुग वह सीढ़ी है जो हमें दुःख और अंधकार से सुख और प्रकाश की ओर ले जाती है।

आत्मा की सफाई और शक्ति

सम्पन्न बनने का अवसर

कलियुग के प्रभाव से आत्मा पर अनेक विकारों की धूल जम चुकी है। ऐसे में आत्मा को बोझ मुक्त होना और अपने को शक्तियों से सम्पन्न करने का समय है। संगमयुग पर राजयोग और परमात्म स्मृति द्वारा आत्मा स्वयं को स्वच्छ और पवित्र बना सकती है। यह समय आत्मा के लिए शक्ति सम्पन्न बनने और विकारों से मुक्ति पाने का विशेष अवसर है।

भविष्य के भाग्य की नींव

रखने का समय

संगम के समय में आत्मा सतयुग और त्रेतायुग के दिव्य जीवन की कमाई करती है। जैसे किसान बुवाई के समय परिश्रम करता है और फसल का आनन्द पाता है, वैसे ही यह

युग आत्मा के लिए बुवाई का समय है। यहाँ किए गए श्रेष्ठ कर्म और सेवा भविष्य सुख सम्पन्न जीवन का आधार बनते हैं।

संगमयुग का समय केवल अनमोल ही नहीं बल्कि आत्मा को पवित्र और शक्तिशाली बनाने का व विश्व के भविष्य को नया स्वरूप देने का भी है। तो इस समय को उत्तम बनाने में लगाएं। योग, ज्ञान, पवित्रता और सेवा से आत्मा का भविष्य हीरा बन जाता है। यही संगमयुग का सच्चा महत्व और इसे सार्थक बनाने का मार्ग है।



आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और वास्तुकारों (एसईए) प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, एसईए प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, माउंट आबू, एसईए प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, भिलाई, एसईए प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण, पानीपत, एसईए के जोनल समन्वयक ब्र.कु. पीयूष, नई दिल्ली, दुर्गापुर स्टील प्लांट एचआर कार्यकारी निदेशक श्रीमती सुरिमता रॉय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सीएमडी राजीव कुमार विश्वा, श्रीनगर, उत्तराखंड, त्रिभुवन विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संस्थान के प्रोफेसर डॉ. हरि प्रसाद पंडित, नेपाल, वीएनआईटी निदेशक प्रो. पीएल पटेल, नागपुर, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड एचआरआरएल, पचपदरा के मुख्य जीएम सिसिर कुमार मिश्रा तथा अन्य।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के विश्व शान्ति धाम सेवाकेन्द्र पर आयोजित जन्माष्टमी तथा स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में उपस्थित राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज दीदी व अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।



जोधपुर-राज। जेल अधीक्षक प्रदीप लखावत को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मीनू। साथ हैं ब्र.कु. जयलक्ष्मी।



पटियाला-पंजाब। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर प्रीति यादव को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राखी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।



नौयडा-सेक्टर 50(उ.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर माननीय लोकसभा स्पीकर ओम बिस्ला को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. यशोदा, सेक्टर 75, ब्र.कु. रघु तथा अन्य ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें।



मोतिहारी-बिहार। पूर्व केन्द्रीय मंत्री राघवमोहन सिंह के 77वें जन्मदिवस पर महात्मा गांधी प्रेक्षागृह में आयोजित सम्मान समारोह में आध्यात्मिक सेवा द्वारा मूल्यांकों को पुनर्स्थापित करने की सेवा के लिए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीना को सम्मानित करते हुए चंपारण सांस्कृतिक महोत्सव के सहायक सचिव एवं भाजपा नेता अनिल कुमार वर्मा। साथ हैं अन्य।



रेवाड़ी-हरियाणा। राज्यसभा सांसद राम चंद्र जांगड़ा को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. रामसिंह। साथ हैं भाजपा जिलाध्यक्ष वंदना पोपली जी, ज्ञानचंद जी तथा अन्य।



कोरापुट-नारायण पटना(ओडिशा)। विधायक पवित्र साउता को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी भाई। साथ हैं ब्र.कु. रमा व ब्र.कु. हरिप्रिया।



दिल्ली-गाजीपुर। राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय के प्रधानाचार्य से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन। साथ हैं ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।



ज्यौरी-हि.प्र.। झाकरी में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. डोलमा बहन, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. सावित्री, एसजेवीएनएल हाइड्रो प्रोजेक्ट के एचओडी मनीष शर्मा तथा अन्य स्टाफ।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव जरूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी जरूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीजें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।



अध्यात्म हमें संस्कारी एवं सेवाभावी बनाता

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के नव विश्वभवन में आयोजित शिक्षकों के सम्मान समारोह में संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा के कुलपति प्रोफेसर प्रेम प्रकाश सिंह ने कहा कि भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए शिक्षा जगत में कई त्रुटियाँ और खामियाँ हैं जिसे निकालना बहुत जरूरी है। सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. विद्या ने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः किताबों एवं डिग्रियों तक सीमित हो गई है जिसमें अभी आध्यात्मिकता के समावेश की नितांत आवश्यकता है। श्री साई बाबा आदर्श महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने कहा कि आज आवश्यकता है कि शिक्षक स्वयं को सिर्फ एक वेतन

भोगी कर्मचारी ना समझते हुए गुरु समझे एवं अनुशासन की छड़ी द्वारा विद्यार्थियों के सुंदर भविष्य का निर्माण करें। केन्द्रीय विद्यालय प्राचार्य राजेश प्रसाद, अम्बिकापुर ने कहा कि आज शिक्षा और अध्यात्म एक साथ लाने की आवश्यकता है। शासकीय कंप्यूटर साईंस इंजीनियरिंग कॉलेज के एच.ओ.डी. डॉ. मोहन राव मामडीकर, आई.टी.आई. अम्बिकापुर की प्रिंसिपल श्रीमती पूर्णिमा पटेल एवं समग्र शिक्षा के ए.पी.सी. संजय सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में उप यातायात प्रभारी अभय तिवारी, समाजसेवक मंगल पांडे, नवीन गोयल, डॉ. संजय गोयल सहित 150 से भी अधिक शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. प्रतिमा ने किया।

राष्ट्र का निर्माण संसद में ही नहीं, बल्कि विद्यालय में भी होता



नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के दिव्य संस्कार भवन में आयोजित शिक्षकों के लिए सम्मान समारोह कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम ने बताया कि डॉ. राधाकृष्णन जन्मोत्सव की यादगार में 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। लंबे अरसों तक शिक्षक बन उनका एक ही वाक्य था कि राष्ट्र का निर्माण संसद में ही नहीं बल्कि विद्यालय में भी होता है। शिक्षक, गुरु, और आचार्य राष्ट्र का निर्माण करने का आधार हैं। वर्तमान समय सब शिक्षकों के भी परम शिक्षक, परम सद्गुरु, परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुनः मानव मात्र को देव

तुल्य बनाने की दिव्य शिक्षा दे रहे हैं। पीजी कॉलेज के प्राचार्य आर.बी. सिंह ने कहा कि शिक्षक को भगवान तक का दर्जा दिया गया है क्योंकि वो छात्रों के जीवन को गढ़ता है। उत्कृष्ट विद्यालय के प्राचार्य जी.एस. पटेल ने कहा कि शिक्षा में आध्यात्मिकता का समावेश करें ताकि हम अपने दायित्वों का निर्वहन भली-भाँति कर सकें। कार्यक्रम में एम.एल.बी. स्कूल की प्राचार्या श्रीमती आशा नेमा, डॉ. जमीला, माउंट आबू तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन प्रमेश कौरव ने किया एवं सभी अतिथियों का आभार व्यक्त मुकेश नेमा ने किया।

व्यक्ति के भविष्य की नींव - विद्यार्थी जीवन

बिलासपुर-छ.ग.। अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय में नवनिर्वाचित विद्यार्थियों के लिए आयोजित 'दीक्षारम्भ 2025' कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति ने कहा कि विद्यार्थी जीवन को सम्पूर्ण जीवन का आधार माना जाता है क्योंकि यह समय व्यक्ति के भविष्य की नींव रखता है। जिससे वह ज्ञान, चरित्र निर्माण, आवश्यक कौशल प्राप्त करता है और एक सफल



व सभ्य नागरिक के रूप में समाज के किसी भी क्षेत्र में योगदान देने के लिए तैयार होता है। अंत में दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर वी.के. सारस्वत ने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य निर्धारित कर उस लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए टिप्स बताए। कार्यक्रम के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति एडीएन वाजपेयी ने कहा कि विद्यार्थियों से अपेक्षाएं उतनी ही रखें जितना कि वह उन अपेक्षाओं को पूरा कर सकें। माननीय कुलसचिव डॉ. तारणीश गौतम ने आभार व्यक्त किया। अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एडीएन वाजपेयी ने ब्र.कु. स्वाति दीदी का शॉल, मोमेंटो एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम में ब्र.कु. संतोषी, उद्योगपति चंद्रशेखर देवांगन, कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. सुमोना भट्टाचार्य, एडिशनल कैबिनेट सेक्रेटरी डॉ. कमल छाबड़ा, विश्वविद्यालय के सभी प्रभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थिगण उपस्थित रहे।

युवाओं के लिए 'नई उमंग, नई तरंग' अभियान का किया शुभारम्भ

गुरुग्राम-ओ.आर.सी.(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के भोराकला स्थित ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर के दादी प्रकाशमणि सभागार में युवाओं के लिए आयोजित 'नई उमंग, नई तरंग' अभियान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुरुआत हुई। 19 सितम्बर से 21 दिसम्बर तक चलने वाले इस अभियान के तहत दिल्ली एवं एनसीआर में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। अभियान का लक्ष्य युवाओं को उनकी क्षमताओं से जागरूक कर उन्हें प्रेरित करना है। उनमें लक्ष्य के प्रति नई ऊर्जा का संचार करना है। साथ ही नशे एवं व्यसन की बुरी आदतों से मुक्त करना है। इस अवसर पर ग्लोबल योग एलायंस के अध्यक्ष डॉ. गोपाल ने कहा कि युवा आशावादी होते हैं। अगर युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा दी जाए तो शक्तिशाली समाज का निर्माण हो सकता है। उन्होंने कहा कि सात्विक भोजन से विचार, विचार से कर्म और कर्म से संस्कार श्रेष्ठ बनते हैं। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के सहायक निदेशक संदीप यादव, दिल्ली ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज एवं एन.सी.बी. के मध्य एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए हैं। उन्होंने कहा कि नशे की लत के कई कारण हैं। जिसमें प्रमुख रूप से जिज्ञासा, साधियों का दबाव, तनाव, शौक एवं दिखावा है। अगर युवा मानसिक रूप से मजबूत होंगे तो नशे के आदि नहीं हो सकते। ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि जीवन में कभी भी निराशा नहीं होना। जीवन के अंतिम क्षणों तक भी पास फलट सकता है। असफलता,

सदैव हमें एक पाठ पढ़ाती है। भारत को विश्व गुरु बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि उमंग-उत्साह जीवन की सांसें हैं। आज युवाओं में तनाव और निराशा बढ़ रही है। स्वयं से उनका विश्वास घट रहा है। ऐसे में संस्था का युवा प्रभाग युवाओं के लिए अनेक अभियान आयोजित करता है। उन्होंने कहा

और व्यसनों से होने वाले नुकसान के बारे में बताया। युवा प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश ने भी अपने विचार व्यक्त किए। युवा प्रभाग दिल्ली के संयोजक ब्र.कु. रोहित ने भी अपने विचार रखे। युवा प्रभाग दिल्ली की संयोजिका ब्र.कु. अनुसूया ने अपने शब्दों से सभी का अभिवादन किया। ब्र.कु. गीता, भीनमाल ने सभी को राजयोग के अभ्यास से गहन शान्ति की अनुभूति



कि युवाकाल जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल है। इस काल में युवा मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक क्षमताओं को जितना बढ़ाना चाहे बढ़ा सकता है। उन्होंने कहा कि अपनी कभी भी किसी से तुलना न करें। आप इस दुनिया में अद्वितीय हैं। युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कृति दीदी ने अभियान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। जीबी पंत हॉस्पिटल के सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वप्न गुप्ता ने नशे

कराई। ब्र.कु. जीतू, माउंट आबू ने सभी को नशामुक्त एवं विकसित भारत के लिए प्रतिज्ञा कराई। लक्ष्मी नगर, दिल्ली से आये युवा कलाकारों ने 'नई उमंग, नई तरंग' विषय पर बहुत सुन्दर नाटक का मंचन किया। पश्चिम विहार, दिल्ली के युवाओं ने नृत्य द्वारा सबका मनोरंजन किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. विद्यात्री ने किया तथा कार्यक्रम में 1000 भी अधिक युवाओं एवं अन्य लोगों ने शिरकत की।

'प्रकृति एवं जीव' के तालमेल से गाँव बनेगा समृद्ध



मेहराना-गुज.। ब्रह्माकुमारीज गुजरात की ईश्वरीय सेवाओं के 60 वर्ष पूर्ण होने पर क्षेत्रीय ब्रह्माकुमारीज संस्थान डायमंड जुबली वर्ष मना रहा है। इसके अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग सितम्बर एवं अक्टूबर मास में मेरा गाँव, बने महान योजना के अंतर्गत पूरे गुजरात के गाँवों के सर्वांगीण विकास के

लिए 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के दिन आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि भारत के गाँव, गोपाल, गऊ एवं गोपी से बनी मूल्यों से भरी संस्कृति थी। उस समय रास्तों पर एवं घरों में लाइट नहीं थी किन्तु सभी की ज्योत सद्गुणों से

भरपूर होने के कारण पूरा गाँव झगमगाता था। सभी सुखी थे। आज सब कुछ होते हुए भी गाँवों की स्थिति दयनीय हो गई है। गाँवों को फिर से महान एवं समृद्ध बनाना है तो आवश्यकता है कि सभी के अंदर आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश हो। कृषि विज्ञान केन्द्र, खेरवा के सीनियर साईंटिस्ट एवं हेड डॉ. रमेश भाई पटेल ने कहा कि मनुष्य के विचारों को सुधारने का कार्य यह ब्रह्माकुमारीज संस्था कर रही है। बागवानी महाविद्यालय जगुदन के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. हितेश भाई पटेल, गुजरात सरकार द्वारा 'वन पण्डित' अवॉर्ड विजेता गणपत यूनिवर्सिटी, खेरवा के फार्म मैनेजर अश्विन भाई पटेल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ब्र.कु. कुसुम ने सभी मेहमानों का शब्दों से स्वागत किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. वर्षा ने किया।

सशक्त राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का योगदान

दुर्ग-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के आनंद सरोवर में भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'नशा मुक्त युवा-विकसित भारत' कार्यक्रम में रंगटा कॉलेज में अध्ययनरत प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये युवा छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। हेमचंद्र विश्वविद्यालय के कुलसचिव भूपेन्द्र कुलदीप ने कहा कि सशक्त राष्ट्र का निर्माण तभी होगा जब मन को स्वस्थ रख अपने अंदर सकारात्मक बदलाव लाएँ और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए मेडिटेशन करें, सकारात्मक लोगों की संगति करें, सकारात्मक विचारों से घिरे रहें। शिक्षा विभाग के संयुक्त संचालक आर.एल. ठाकुर ने कहा कि व्यसन व नकारात्मकता से मुक्त होने के लिए दृढ़ संकल्पों की आवश्यकता है। रंगटा कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. सत्यधर्म भारती ने कहा कि सशक्त युवा बनने के लिए



आज ही दृढ़ संकल्प कीजिए कि जो भी व्यसन है उसको आज से ही विराम देंगे। प्लास्टिक सर्जन डॉ. दीपक कोठारी, दुर्ग ने कहा कि तनाव दूर करने का उपाय सिर्फ व्यसन करना नहीं है, बल्कि इसकी जगह मेडिटेशन करें व सकारात्मक लोगों के साथ रहें। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा ने कहा कि युवा जागृत है, नशा मुक्त है

तो देश महान ही नहीं सर्वश्रेष्ठ है। ब्र.कु. चैतन्य प्रभा ने भी अपने वक्तव्य रखे। ब्र.कु. रूपाली ने ब्रह्माकुमारीज संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी और अंत में युवा छात्र-छात्राओं को प्रतिज्ञा कराई कि विकसित भारत के लिए स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

विश्व एकता और विश्वास हेतु नयी शिक्षा पर शिक्षाविदों का राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली-हरि नगर। ब्रह्माकुमारी संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'विश्व एकता और विश्वास हेतु नयी शिक्षा' विषय पर स्थानीय डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित शिक्षकों का एक राष्ट्रीय महासम्मेलन में दिल्ली सरकार के उद्योग मंत्री व भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व की सबसे बड़ी संस्था है जो नारी शक्ति का परिचायक है। यहाँ की आध्यात्मिक शिक्षा श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण करती है। उन्होंने राजयोग विचार प्रयोगशाला प्रदर्शनी का अवलोकन किया और इसे अद्भुत कहा।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा संस्थान (ए.आई.सी.टी.ई.) के अध्यक्ष प्रो. टी. जी. सीताराम ने छात्रों में बढ़ते हुए अवसाद की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज हर तीसरा विद्यार्थी अवसादग्रस्त है। केवल तकनीकी शिक्षा ही पर्याप्त नहीं, इसके साथ हमारी आंतरिक प्रज्ञा और आत्मबल को बढ़ाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा भी आवश्यक है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा चलाई जा रही 'स्वयं पोर्टल, राजयोग लैब तथा अन्य आंतरिक सशक्तिकरण प्रणाली' इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।



ब्रह्माकुमारी संस्थान के शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने



कहा कि नयी शिक्षा, नये संस्कार और नयी सृजन प्रक्रिया का कार्य स्वयं परमात्मा

का है, जो वह उनके मानवीय माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा अलौकिक रीति से

करा रहे हैं और इससे ही भारत विश्वगुरु बनेगा। इस अवसर पर कार्यक्रम की

मुख्य आयोजिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने आंतरिक सशक्तिकरण हेतु राजयोग साधना को आधार बताया। ब्रह्माकुमारी संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी ने भी अपने प्रेरक विचार रखे। राजयोग ध्यान द्वारा डिवाइन हीलिंग का सामूहिक अभ्यास व अनुभव करते हुए ब्र.कु. आशा ने सभागार में उपस्थित जन समूहों को आंतरिक शान्ति, शक्ति एवं सुखद स्थिति का एहसास कराया। कॉन्फ्रेंस में दिल्ली एन.सी.आर. तथा देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे लगभग 500 शिक्षाविदों सहित शहर के गणमान्य अतिथियों ने भी कार्यक्रम में भाग और लाभ लिया।

भारत को विश्वगुरु बनाने हेतु मूल्य-आधारित शिक्षा जरूरी



ब्र.कु. शिवानी ने सहज राजयोग शिक्षा को मानव जीवन, चरित्र एवं समाज उत्थान का आधार बताते हुए कहा कि सृष्टि का आरम्भ संकल्पों से होता है और मानव संसार उसके संस्कारों से निर्मित होता है। आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग ध्यान के माध्यम से हम अपने जीवन में सुखद, सफल व सकारात्मक बदलाव और पूर्णता को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि दृढ़ संकल्प, संपूर्ण आत्मविश्वास, आध्यात्मिक और मूल्य-आधारित शिक्षा के आधार पर ही हम भारत को पुनः विश्वगुरु बना सकते हैं तथा धरा पर विश्व शान्ति, एकता और भाईचारे को पुनः स्थापित कर सकते हैं।

समाज में नैतिकता और आध्यात्मिकता-एक स्वर्णिम युग की ओर विषय पर राजनीतिज्ञों का चार दिवसीय सम्मेलन



आबू रोड-आनन्द सरोवर(राज.)।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग द्वारा आनन्द सरोवर में चार दिवसीय राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ सम्मेलन 'राजनेता सेवक या शासक-आत्म अवलोकन द्वारा श्रेष्ठ नेतृत्व' विषय पर आयोजित समापन सत्र में मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष चासुदेव देवनानी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में कहा गया है- सेवा परमोधर्मः। हमें यह सोचना पड़ेगा कि मैं राजनीति में क्यों आया? आज राजनीति में त्याग के भाव की आवश्यकता है। राजनीति में आया व्यक्ति यह सोचेगा कि मैं सेवा के उद्देश्य से आया हूँ तो निश्चित रूप से उसमें कुछ बदला हुआ नजर आएगा।

नेताओं की छवि ऐसी हो कि लोग

हाथ जोड़ें

राजस्थान सरकार के राज्य मंत्री ओटाराम देवासी ने कहा कि सेवक

या शासक यह विषय बहुत बड़ा है। शान्तिवन आने के बाद जो शान्ति मिलती है उससे तो हम अपने घर-परिवार से जुड़ी सारी चिंताएं ही भूल जाते हैं। जीवन और विचार पानी की



तरह हैं जिसे जिस भी दिशा में ढालना चाहो वैसा ढल जाता है।

हमें अपने मन-बुद्धि का शासक बनना है

राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय

समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने कहा कि जब हम अपनी सूक्ष्म और स्थूल इंद्रियों के शासक बन शासन करेंगे तो हमारा जीवन श्रेष्ठ और प्रभावशाली बनेगा। सबसे पहले हमें मन-बुद्धि का शासक बनना है। जिसने अपने पर शासन करना सीख लिया वह दुनिया पर शासन करना सीख जाता है। शिवबाबा ने हमें शिक्षा दी है कि बच्चे स्वराज्य अधिकारी बनो अर्थात् अपने ऊपर राज करना सीखो। राजयोग से हम स्वयं पर अर्थात् अपने मन-बुद्धि के ऊपर राज करना सीख जाते हैं।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि इस पवित्र स्थान में आपने चार दिन तक जो ज्ञान प्राप्त किया है उसको पहले स्वयं में धारण कर फिर बाद में अपने-अपने सेवा स्थान पर जाकर प्रचार-प्रसार करें, तभी इस सम्मेलन का उद्देश्य सार्थक होगा।

श्रेष्ठ शिक्षक वही जो मूल्य-आधारित शिक्षा दे

देहरादून-उतराखंड। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'शिक्षक स्नेह मिलन' समारोह में देहरादून सबजोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी ने आशीर्चन देते हुए कहा कि शिक्षक माना ही जो शिष्टाचार हो, क्षमाशील हो एवं करके दिखाने वाला हो और ऐसा ही विद्यार्थियों को भी बनायें। एशियन स्कूल की प्रिंसिपल रुचि दत्ता ने कहा कि शिक्षक का कितना अहम रोल है विद्यार्थियों के जीवन में, इसलिए सिर्फ उन्हें पढ़ाना नहीं है, खुद के व्यक्तित्व को भी ऐसा बनाना है। श्री सनातन धर्म जूनियर हाई स्कूल की प्रिंसिपल पंकज माथुर बहन ने कहा कि शिक्षक केवल 99 परसेंट के लिए ना पढ़ाएं अपितु जीवन में जो मूल्यों की कमी दिखाई दे रही है वो भी सिखाएं। प्रेमनगर स्थित दून प्रेसीडेंसी स्कूल की प्रिंसिपल अल्पना गुप्ता ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि स्टूडेंट्स को निःस्वार्थ प्रेम से ही जीता जा

सकता है, परिवर्तन किया जा सकता है। एम.के.पी. इंटर कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. सीमा रस्तोगी ने भी शिक्षकों की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए। पाइन हॉल स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. रमा आनंद ने बताया कि एक मिनट साइलेंस का अभ्यास क्लास में अवश्य करना चाहिए, इससे बहुत फायदा देखने को मिलता है। उत्तरांचल आयुर्वेदिक कॉलेज के चेयरमैन डॉ. अश्विनी कम्बोज ने शिक्षकों के कार्यों की महानता पर प्रकाश डाला। वर्षा ठाकुर, शिक्षक कॉस्मिक एनर्जी वास्तुशास्त्र भारत, ऑस्ट्रेलिया व सिंगापुर द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। सभी शिक्षकों ने बहुत सुंदर अनुभूति की और स्वयं को व विद्यार्थियों को सशक्त बनाने के लिए राजयोग सीखने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. स्वाति ने किया। सभी मंचासीन अतिथियों का ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा पटकों व पुष्पों से स्वागत एवं सम्मान किया गया।



● पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरसिया ने कहा कि ब्रह्माकुमारी द्वारा पूरे देश-विदेश में समाज के कल्याण के लिए कार्य किया जा रहा है।

● मध्यप्रदेश, सुसनेर के विधायक भैरोंसिंह परिहार ने कहा कि मैं जब पहली बार ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर गया तो वहाँ जो सीख मिली वह जीवनभर के लिए अनमोल धरोहर बन गई। ब्रह्माकुमारी एक ऐसी संस्था है जहाँ कोई आडंबर नहीं है। यहाँ जैसी सच्चाई कहीं मिल नहीं सकती है।

● मध्यप्रदेश, कोलार के विधायक महेन्द्र राम सिंह यादव ने कहा कि नेता राजनीति की चक्काचौध में जिस सेवा के उद्देश्य से राजनीति में आये हैं वह कभी भूलना नहीं चाहिए। पूर्व विधायक नारायण दत्त शर्मा, पूर्व राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त राजू पाठक, मध्यप्रदेश, प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ओआरसी निदेशिका ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन ब्र.कु. सपना, दिल्ली ने किया।